सन्तवाणी

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहुणं
एसो पंचनमुक्कारो
सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणंच सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलं

जैन धर्मदिवाकर श्रमणसंघीय तृतिय पट्टधऱ

आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज

के सुशिष्य

प्रज्ञामहार्षि प्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने

समस्त भारत मे जो प्रवचनों द्वारा महावीर वाणी को

जन – जन तक पहुँचाया उसका अध्यात्मिक सार

आज्ञानुसार

ई-पुस्कालय के लिए संकलन कर्त्ता-

स्वतन्त्र जैन जलन्धर

9855285970

86, करतार ऐवन्यु, हैबोवाल लुधियाना

सन्तवाणी

मंगल पदार्पण एवं प्रवचन

सर्वधर्म प्रेमी बन्धुओं को सूचित करते हुए अति हर्ष हो रहा है कि उपाध्याय प्रवर श्री रमेश मुनि जी महाराज.. उपप्रवर्त्तक श्री डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज एवं सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी महाराज आदि ठाणा-7 शुक्रवार दिनांक 7 नवम्बर 2014 को चिकपेट जैन स्थानक से प्रातः 7 बजे विहार कर श्रीरामपुरम् जैन स्थानक में पधार रहें है। इस अवसर पर आप सभी को श्री संघ सपरिवार सादर आमन्त्रित करता है।

अहं छोड़कर विनय को धारण करें

जैन स्थानक बैंगलुरू के यशवंतपुर में प्रवचन करते हुए प्रवर्तक डॉ राजेन्द्र मुनि महाराज ने कहा कि आज का मानव विनय के अभाव में सर्वत्र अहंकार के प्रदर्शन में लगा हुआ है। अहं के चलते हुए ही वह वस्तुस्थिति को जानकर भी अपने को असत्य पर खड़ा कर देता है, उसकी आंतरिक स्थिति कुछ और रहती है और बाहरी स्थिति में अपने को उत्कृष्ट स्थापित करता है। सभी धर्मग्रन्थों व पंथों में विनय धर्म अपनाने का संदेश दिया है । विनय एक ऐसा कवच है जो सुरक्षा प्रदान करता है। व्रय घर को

स्वर्ग बना देता है और परिवार को सदा सुरक्षित रखता है। असंभव कार्य को भी विनय संभव कर देता है।

मुनि श्री जी ने कहा कि जो बाल्टी कुएं मे पानी के समीप जाकर झुक जाती है वह पानी से लबालब भर जाती है और उसके विपरीत जो झुकने को तैयार नहीं हो पाती, वह खाली ही लौट आती है। जो बालक माता-पिता,गुरुजन व राष्ट्र के प्रति विनयभाव रखते हैं वे अपने भविष्य को सफल बनाते हैं। सभा के महासती सुमनप्रभा जी ने चेतन-अवचेतन की व्याख्या करते हुए कि दोनों साथ रहकर भी पृथक-पृथक हैं, इसे ही भेद विज्ञान कहा जाता है । हमारा लक्ष्य जड़ शरीर न होकर चेतनमय आत्मा है। देह होकर भी विदेह अवस्था में रत रहना ही चेतन्यता है। संघ के मन्त्री सुरेन्द्र आंचलिया ने बताया कि संतों के सान्निध्य में सोमवार को स्थानक में प्रात- 9 बजे सामूहिक जाप आयोजित किया गया है।

वाणी अनमोल रत्न है

बैंगलुरू के सिटी स्थानक में चतुर्मासार्थ विराजित डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने मुनि वाणी को अनमोल रत्न बताते हुए कहा कि प्राकृति प्रदत्त वचन में अपूर्ण उर्जा समाहित है. यह अभिव्यक्ति का अपूर्ण साधन है। वचन व्यवहार से मित्र और दुश्मन भी तैयार होते हैं। एक कटु वचन से वर्षों की मित्रता भी दुश्मनी में बदल जाती है। एक मधुर वचन से दुष्टता भी सज्जनता का रुप धारण कर लेती है । मानव की जाति-पाति, कुल,

खानदान की पहचान भी ये वचन ही करवाते हैं। आज के युग में वचन दरिद्रता के कारण ही मन मुटाव बढ़ते जा रहें है। पूर्व इतिहास में बड़े-बड़े युद्ध आपसी वचनों के टकराव से उत्पन्न हुए।

कैकयी व द्रौपदी के वचनों से ही रामायण और महाभारत के घटनाक्रम निर्मित्त हो गये थे। मिठास मिठाईयों मे न होकर मानव के वचनों में निहित है। एक मधुर वचन के सन्मुख सैंकड़ों मिष्ठान भी फीके पड़ जाते हैं, अतः इन्सान का सदावचन रूपी आभूषण को धारण कर बोलने से पहले सोचकर बोलने का अभ्यास करना चाहिए। हृदय रूपी तराजू में पहले तोल फिर बोल की आदत रखने वाला सदा सुखी रहता है।

उपाध्याय रमेश मुनि जी महाराज ने कहा कि तप से कर्मों का क्षय होता है और तप से आत्मा पवित्र बनती है। तप से जीवन में निखार आता है। उन्हों ने बताया कि जैन धर्म में तप को शिरोमणी माना जाता है। मन, वचन और काया के तप से जीवन में उर्जा जागृत होती है। वही सत्संग कहलाता है। बचपन से ही अच्छी संगत में पलने पोसने वाला बालक ही आगे जाकर भविष्य में महानता को प्राप्त करता है। माता-पिता, गुरुजनों की संगत में रहने वाला इन्सान सदैव सफलता को प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ता है।

श्री राजेन्द्रमुनि पहुँचे यशवंतपुर

उप प्रवर्त्तक श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज एव सलाहकार श्री दिनेश मुनि जी महाराज आदि ठाणा-5 मंगलवार को प्रात- यशवन्त नगर स्थानक में पहुँचे। संतो के साथ श्री सुरेन्द्र मुनि जी स्थानक में स्वस्थ लाभ ले रहें है। संघ के मन्त्री सरेन्द्र आंचलिया ने बताया कि संतों की यशवंतपुर में रूकने की संभावना है तथा प्रतिदिन प्रवचन प्रातः 8 बजे होगा। मंगलवार को उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा कि व्यक्ति जब तक किसी वस्तु का मुल्यांकन नहीं कर पाता तब तक वह उसका सदुपयोग भी नहीं कर पाता है । हीरे व कांच के टुकड़े को समझने वाला ही हीरे का सदुपयोग करता है। जहर व अमृत दोनों के गुण अवगुण का ज्ञाता ही जहर का परित्याग कर अमृत का पान कर पाता है। लक्ष्मी की महत्ता समझने वाला ही लक्ष्मी संभाल पाता है। मुनि श्री जी ने कहा कि मानव जैसा पवित्र जीवन पाकर भी यदि हमने इसे व्यर्थ में गवां दिया तो यह हमारी नसमझी ही होगी। इस संसार में लोग धर्म को पाकर भी धर्म विरोधी जीवन यापन करते हैं। इस मौके पर संघ के अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह मुणोत, महामन्त्री श्री सुरेन्द्र आंचलिया, कुन्दन मल बाफना, राजमल दलाल, सम्पतराज दरड़ा, भंवरलाल वोहरा, विजय गांधी, सुभा, चोपड़ा, मनोज वोहरा आदि उपस्थित थे ।

शरीर का मुल्य प्राणों से

यशवंतपुर स्थानक में डॉ राजेन्द्रमुनि जी महाराज ने प्रवचन सभा में कहा कि शरीर का अस्तीत्व प्राणों मे ही आधारित है । बिना चेतना के जीवन की कल्पना असंभव है । यही कारण है कि शरीर में प्राण निकलते ही सारे संबंध समाप्त हो जाते हैं। जिस प्रकार नींव के बिना मकान की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार प्राणों के बिना शरीर का कोई मुल्य नहीं। मिठाई के भरे हुए डब्बे को सुरक्षित रखा जाता है, लेकिन खाली डब्बे को कोई नहीं संभालता। इसी प्रकार प्राण निकलते ही शरीर को पंचतत्व में विलीन कर दिया जाता है। द्विपेन्द्र मुनि जी ने ज्ञान को आत्मा का निजगुण बताते हुए कहा- ज्ञान के अभाव में जीवन व्यर्थ है । संघ अध्यक्ष सुमेरसिंह मुणोत ने कार्यक्रम का संचालन किया।

समभाव से मिलता है मोक्ष

जैन स्थानक चिकपेट में डॉ राजेन्द्रमुनि जी महाराज ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समभाव रस का अनिवार्य बताते हुए कहा कि संसार के समस्त जीवों के साथ जिस दिन समभाव प्रकट होते हैं उसी दिन जीव मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। सर्वोत्कृष्ट साधना जीवन के अन्तिम क्षणों में मन गजसुकमाल मुनि ने धारण की, तत्काल वे मोक्ष को प्राप्त कर गये। आज मात्र स्थानक-मंदिरों तक ही हमारा धर्म सीमित हो गया है। जबकि धर्म की ज्यादा आवश्यकता घरों में और व्यापार-व्यवसाय कार्य करते समय में है। सभा में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने बाह्य तथा अभ्यंतर तप की व्याख्या करते हुए कहाकि आंतरिक तप के

अभाव में बाहरी तप भी गुण नहीं कर पाता। काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद को छोड़े बिना धर्म की प्राप्ति असंभव है। सभा में डॉ द्विपेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा कि भक्ति से ही भगवान की प्राप्ति संभव है। सभा में संघ अध्यक्ष चेतनप्रकाश डूंगर ने अगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। चेयरमैन आशोक रांका आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

संवाद धर्म को अपनाए

जैन स्थानक चिकपेट की प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्रमुनि जी महाराज ने वाद-विवाद छोड़कर संवाद धर्म अपनाने का संदेश दिया। चातर्मास समापन समारोह में उन्होंने यह बात कही। इस मौके पर सुरेन्द्र मुनि व डॉ पुष्पेन्द्र मुनि ने नवकार महामन्त्र का जाप किया। दिनेश मुनि ने दीक्षा दिवस पर व द्विपेन्द्र मुनि के जन्म दिवस पर उनका अभिनन्दन किया। पारसमल बागरेचा, बाबूलाल रांका, भंवरलाल गोटावत, चेतनप्रकाश डूँगरवाल, दीपचन्द भंसाली, राजेश मुंथा, रतनचंद सिंघी, शांतीलाल मकाणा, आदि भी उपस्थित थे। उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी महाराज ने मंगल आशीर्वचन के साथ मंगलपाठ प्रदान किया ।

गुरु पुष्कर जन्म जयन्ति समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न पर उमड़ा जन सैलाब-ग्रन्थ का विमोचन

राज्यपाल वजूभाई वाला ने कहा कि जिस देश में मातृ शक्ति का सम्मान होता है, वही देश समृद्ध एवं सशक्त होता है। कभी भी भूलकर मातृशक्ति का अपमान नहीं करना चाहिए। मातृशक्ति का मान सम्मान ही हमारी पूंजी है।

समारोह में राज्यपाल वजूभाई वाला ने उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज एवं डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज की दीक्षा स्वर्ण जयन्ति पर प्रकाशित ग्रन्थ संयम स्वर्णाभिनंदन ग्रन्थ का विमोचन कर, मुनिवृन्दो को भेंट किया। संघ के पदाधिकारी और चातुर्मास समिति के चेयरमैन बाबूलाल रांका, ट्रस्ट अध्यक्ष पारसमल बागेचा व मन्त्री शांतीलाल गोटावत सेंत अन्य पदाधिकारीयों ने राज्यपाल को राजस्थानी साफा पहनाकर सम्मान किया। इस मौके पर साध्वी सुमनप्रभ जी की पुस्तक सुमन स्वर का विमोचन यशवंतप्र संघ के अध्यक्ष सुमेर सिंह मणोत एवं सुरेन्द्र आंचलिया ने किया।

वर्धमान जैन स्थानकवासी श्रावक संघ, सिटी शाखा की ओर से गांधीनगर स्थित फ्रीडम पार्क में उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी महाराज,डॉ राजेन्द्रमुनि जी महाराज व दिनेशमुनि ठाणा ।आदि के सान्निध्य में आयोजित उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी की 105 वीं जयन्ति समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे, राज्यपाल ने कहा जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं।

भारत में नारी की महत्ता आदिकाल से ही की जा रही है। जितने भी महापुरुष हुए हैं उन सब की पहचान उनके पिता से नहीं बल्कि मां के नाम से होती है। उन्होंने कहा कि अहिंसा, अनेकांतवाद, अपरिग्रह आदि सिद्धांतो को अपनाते हुए उत्तम चारित्र का निर्माण करना चाहिए । क्योंकि व्यक्ति को धन से नहीं गुणों से पूजा होती है। केवल धन हो और गुण नहीं तो वह धन भी ज्यादा दिन नहीं चलेगा, इसलिए धन के साथ गुण भी होना आवश्यक हैं । यदि धन और गुण दोनों आ जाएं तो मनुष्य शिखर को छू सकता है । सत्य बोलना और धर्म का आचरण करना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। आज राज दंड पर धर्म दंड का प्रभाव नहीं रहा, जिसके कारण दुराचरण बढ़ रहे हैं । राज दंड पर धर्मदंड होना आवश्यक है।

वे वचन सिद्ध सन्त थे

डॉ राजेन्द्र मुनि महाराज ने कहा, यदि भगवान महावीर के अपरिग्रह और अनेकान्तवाद के सिद्धांत का सभी लोग पालन करना शुरु कर दें तो देश में व्याप्त अशान्ति और आंतकवाद का अपने आप ही खात्मा हो जाएगा। इसलिए भगवान महावीर के सिद्धांतो को अपनाना चाहिए। सलाहकार दिनेशमुनि ने कहा कि पुष्कर मुनि का जीवन गंगा की तरह निर्मल था।

वे सदैव हिमालय की तरह दृढ़ रहते थे। उनका हृदय हिमालय की तरह ऊँचा, समुद्र की तरह गहरा और आकाश की तरह विशाल था। वे वचन सिद्ध सन्त थे । उन्होंने श्रमण संघ

एकता के लिए कई सम्मेलन करवाए। दीपेन्द्र मुनि ने कहा कि जिस प्रकार ऊँचाई को नापने के लिए पर्वत पर सागर की गहरी को नापने के लिए समुद्र में जाना पड़ता है, उसी प्रकार महापुरुषों को समझने के लिए विशाल बनना पड़ता है। सन्त के जीवन चरित्र को समझे बिना उनके सिद्धांतों का अनुसरण नहीं किया जा सकता। पुष्पेन्द्र मुनि ने कहा कि सम्राट राजसिंहासन पर बैठता है और सन्त लोगों के दिलों में वास करते हैं। इसलिए सम्राट भय के कारण लोगों के दिमाग में रहते है । साध्वी सिद्ध श्री जी ने कहा कि पुष्कर मुनि साधना के शिखर पुरुष थे। जो भी उनके सान्निध्य में रहा वह उनके गुणों से सुवासित हो गया। समारोह के अध्यक्ष जैन कान्फ्रैंस राजस्थान के अध्यक्ष वीरेन्द्र डांगी, समारोह के गौरव प्रशान्त जैन, वरिष्ट मार्गदर्शक श्री नेमीचन्द चोपड़ा, राष्ट्रीय युवाध्यक्ष अमितराज जैन ने भी विचार व्यक्त किए।

चातुर्मास समापन पर उमड़े श्रद्धालु

जैन स्थानक चिकपेट में चातुर्मास समापन के उपलक्ष्य में विशेष समारोह का अयोजन किया गया, जिसमें शहर के उपनगरों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए । कार्यक्रम की

शुरुआत सुरेन्द्र मुनि जी महाराज एव श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी महाराज आदि के सामूहिक नवकार मन्त्र के जाप से हुई. डॉ पुष्पेन्द्र मुनि जी ने आचार्य डॉ हेमचन्द जी महाराज की साहित्यक साधना पर पर प्रकाश डाला, दिनेशमुनि जी ने गुरु ताराचन्द जी महाराज का जीवन दर्शन प्रस्तुत कर उनके समाधिमरण का विवरण प्रस्तुत किया।डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने दीक्षा दिवस एवं द्विपेन्द्र मुनि जी के जन्म दिवस के अवसर पर संघ द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया । डॉ राजेन्द्रमुनि जी ने वाद-विवाद को छोड़कर संवाद धर्म को अपनाने का, अहंकार को छोड़कर विनय धारण करने का संदेश देते हुए कहा कि विषमता की जगह समतामय जीवन व्यतीत करना ही जीवन की सार्थकता है। आज का मानव भौतिकता में निरन्तर प्रगति कर रहा है पर आध्यात्मिकता में पीछे खिसकता चला जा रहा है। उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी महाराज ने मंगल आशीर्वचन के साथ मंगलपाठ प्रदान किया ।

त्याग ही भारत भूमि की पहचान

चतुर्मास के उपरान्त विहार कर श्रीरामपुर जैन स्थानक पहुँचे डॉ राजेन्द्र मुनि महाराज ने शुक्रवार को अपने प्रवचन में कहा कि सन्तों का आना एवं जाना दोनों ही मांगलिक कहा जाता है। संत जहाँ से आते हैं वहीं धर्म प्रेरणा प्रदान कर जाते हैं और जहाँ जाते हैं वहां धर्म भावना देते हैं। उन्हें ने कहा कि भारत भूमि की महत्ता धन वैभव से न होकर त्याग से रही है। सन्तत्व के

कारण ही यह देश विश्व गुरु की महिमा प्राप्त कर सका है। इसके पूर्व सप्तर्षि मुनि मण्डल के उपाध्याय श्री रमेश मुनि जा महाराज, दिनेश मुनि जी, सुरेन्द्र मुनि जी, डॉ द्विपेन्द्रमुनि जी, डॉ पुष्पेन्द्र मुनि जी, दिनेश मुनि जी महाराज चिकपेट से विहार कर श्रीरामपुर पहुँचे।

कोठारी भवन (12.12 1992)

विहार में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने सभा को सम्बोधन करते हुए कहा- मनुष्य और पशु मे प्राकृतिक रुप मे कोई विशेष अन्तर नहीं। पशु जगत से भिन्न उसे श्रेष्ठ अस्तित्व का स्वामी बनाने वाला मनुष्य का अपना मन है मानव ही नाना भांति प्रवृत्तियों का प्रतीक है, और ये प्रवृत्तियां मानव मन की सफल प्रतिनिधि है, मन की संपदा है। अति चंचल स्वभाव का मन ही व्यक्ति के उत्थान पतन का मूल कारण होता है। मन के शुभाशुभ भाव हैं कर्म बंधन व निर्जरा के मूल कारण रुप रहे हैं।

भारत में ही नहीं अपितु पाश्चात्य विद्वानों ने भी अपने अध्ययन का आधार मनोविज्ञान को स्वीकारा है और मन के सूक्ष्म विश्लेषण कर विषय की तह तक पहुँचने का सफल प्रयास किया है। उक्त विचार कोठारी भवन विराजित में व्यक्त किये।

(13.12.1992)

वर्तमान के समय ही समस्त जगत और जीवन की गति-प्रगति के केन्द्रिय बिन्दु का स्वरूप है। क्षंण -प्रवाह ही जीवन

यात्रा है। समय की मूल्यांकन की क्षमता जिसमें नहीं वह अपने जीवन को उच्च उपलब्धियों से नहीं संवार सकता । समय का औचित्यपूर्ण उपयोग ही तो निर्धन को सम्पन्न पातकी की पुण्यात्मा और प्रमादी को श्रमशील बना देता है। इस अभ्यास का अभाव व्यक्ति के लिए उत्कर्ष के सभी मार्गों को अवरुद्ध कर देता है। समय तो सतत रुप से प्रवाहमान रहता है।

घाट के जिस पत्थर को स्पर्श कर सरिता का जल अपनी यात्रा पर आगे बढ़ गया, वह जिस प्रकार घाट के लाख चाहने पर भी लौट नहीं पाता, बीता हुआ क्षण भी उसी प्रकार लाख चाहने पर भी लौट नहीं पाता। समय रहते ही उसका अधिकतम लाभ उठा लेने पर तत्पर रहने वाला व्यक्ति ही सफलता का मुकट धारण कर पाता है।

उन्नति के अवसर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे आते हैं, किन्तु उसे स्वागत के लिए तत्पर न पाकर बेचारे लौट जाते हैं, अवनति और असफलता का यही रहस्य है।

खोया हुआ धन उद्यम से, स्वास्थय, चिकित्सा से, विस्मृत ज्ञान पुनर्भ्यास से पुनः प्राप्त कर लिया जाता है, किन्तु खोया हा समय फिर सो लौटा लाने का कोई साधन हो ही नहीं सकता ।

20.12.1992

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का व्यकतीत्व कृतीत्व प्रभावकारी रहा है । यही कारण है कि आज भी अन्य तीर्थंकरों से बढ़कर पार्श्वनाथ के प्रति अधिक झुकाव है।

पार्श्वनाथ जयन्ति के उपलक्ष्य में विशेष प्रवचन देते हुए पर्श्वनाथ के जीवन की अनेक घटनाओ व अनुपम जीवन पर प्रकाश डाला। वे सम से समता के सागर थे और दया के आगर थे।कमठ तापस द्वारा आयोजित पंचाग्नि तपोत्सव में जलते नाग को देखकर रहा नहीं गया, उन्होंने नाग-नागिन का उद्धार किया।

स्थानीय महावीर भवन में डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने भगवान पार्श्वनाथ 30 वर्ष की आयु में साधना का महामार्ग ग्रहण कर चतुर्विध संघ की स्थापना की और चतर्याम धर्म का प्रचार प्रसार किया। जीवन मे कईं उपसर्ग उपस्थित हुए पर आप सदा समता धर्म पर अडिग रहे, हजारों लाखों अनुयायियों को सत्य अहिंसा का मार्ग प्रदर्शित कर 70 वर्ष का कठोर तप साधना का मार्ग तय कर मोक्ष पधारे।

मन के गुलाम नहीं,मालिक बनो

योग साधना अनुसंधान केन्द्र में उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने धर्मसभा में कहा कि हमें मन का नियंता बनना चाहिए, दास बनने वाला कभी जगत में सुखी नहीं रहा है। मन मनुष्य का स्वामी बनकर में बैठने का अभ्यासी होता है, वही आदेश-निर्देश देकर मनुष्य को गतिमान रखता है, परन्तु वह

उसका छल है । स्वामी तो आत्मा है, इसकिए मन का स्थान मनुष्य के लिए आत्मा से परे नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा मन अपनी तृप्ति के लिए मनुष्य को विषयों की ओर खींचकर ले जाता है, जिसका प्रणाम पतनकारी होता है, इसे मनुष्य शुभ मार्गों में लगाए तो यही उसके उत्थान के लिए भी सहायक हो जाता है। बिना डोर के पतंग भी व्यवस्थित नहीं रह सकती, इसी प्रकार मन पर भी अंकुश लगाना आवश्यक है। आवश्यकता इस बात की है कि मन का स्वस्थ व स्पूर्तियुक्त रखा जाए। शुभ विचारों की निर्मलता इसकी शक्ति को बढ़ाती है और काम, क्रोघ, मद, मोह लोभ इसके अंधो पतन के कारण है । महाराज श्री जी ने कहा मन हठीला होता है, यदि इसे अत्यादिक स्नेह दिया गया तो यह उस अतिवत्सलता प्राप्त पुत्र की भांति हो जाएगा जो अपने अभिभावकों के आदेशों का भी अनादर करता है।

इस अवसर पर साध्वी डॉ दिव्य प्रभा ने कहा कि हमारे मन में शुभ विचार माजूद रहते हैं किन्तु विकारों की प्रबलता उन्हें उबरने नहीं देते। मन दर्पण वत है, इसे किसी भी स्थिति में क्यों न रखा जाए चंचल बालकवत है, जो नटखटी स्वभाव के कारम शांत नहीं बैठ सकता। यदि उसे रचनात्मक कार्यों मे नहीं लगाया गया तो वह विध्वंसात्मक कार्य कर बैठता है। मन उस शैतान की भाँति है जिसे अगर जीता नहीं गया तो वह हमारे यौवन को ही लील जाएगा। साध्वी जी महाराज ने कहा कि मन रूपी इस घोड़े

का साईस बनकर रईस बनना है स्मरण रकना कि घोड़े का साईस ही वास्तविक मालिक होता है, जब कि ईस तो सेवक कर्मचारी मात्र बनकर रह जाता है।

सन्त सुरेन्द्र मुनि जी ने स मौके पर कहा कि ज हर प्राणी अशांत है तो इसी मन के कारण है। मन से ही प्राणी हारा हुआ और मन से ही जीता हुआ कहलाता है। संसार को जीतने वाले की तमन्ना रकने वाले सर्वप्रथम पने मन को जीतना चाहिए। मन के अशुभ परिणाम नरक तक की यात्रा करवा बैटते है। गीता में भी श्री कृष्ण ने इस मन को वश में रकने के लिए दो उपाय अभ्यास और वैराग्य बतले हैं। हम इस मन को वश में रककर सुखी बनें। संत श्री रुपेन्द्र मुनि जी ने इस अवसर पर मंगल गीतिका प्रस्तुत की। डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने योगसाधना भवन के नवनिर्मित केन्द्र के उद्घाटन के पश्चात चातुर्मास के लिए जोधपुर प्रस्थान करेंगे। प्रवचन के दौरान न दिनों समुचे माउँटआबू में धार्मिक समागम का वातावरण बना हुआ है । इस अवसर पर कईं पथभ्रष्ट हुए लोगों ने सन्मार्ग पर चलने का संकल्प लिए हैं।

बाह्यजगत में शांति की खोज मृगतृष्णा के समान

बाहरी जगत में शांति की खोज व्यक्ति को कस्तूरी मृग की भाँति निराश और छटपटाहट देगी। यह बात प्रसिद्ध जैन संत डॉ राजेन्द्र मुनि महाराज जी ने कही।

योगसाधना अनुसंधान केन्द्र में आयोजित भव्य समारोह को संवोधित कर रहे थे। डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने कहा कि मनुष्य के

दो पक्ष है, बाह्य शरीर और अंतर्मन। इन दोनों पश्रों मे गुण साम्य मनुष्य के अंतर रूप की प्राप्ति की जिस में बाधक होता है। मन की मृदुलता से ही प्रेम बंधुत्व सदाशयता, धर्मप्रियता सेवा करुणा औदार्य आदि गुणों का विकास मिल जाएगा।

मनुष्य जितना-जितना बाह्य जगत से दूर होता चला जएगा उतना ही सहज शांति को उपलब्ध होगा,सैशव सुलभ चापल्य, यौवन सहज उत्साह और जरा योग्य चिन्तन शीलता इन तीनों का सुन्दर व समुचित समन्वय ही जीवन है। जीवन एक ऐसी यात्रा है जिसका लक्ष्य ही आगामी विशिष्ट यात्रा की तैयारी करना है, जिसमें यह तैयार हो गई वह सफल जीवन है।

महाराज श्री जी ने कहा सेवा चर्चा का नहीं आचरण का बिन्दु है, औषधी गुणगाण विष्य नहीं सेवन की वस्तु है और सेवा आराधना का पक्ष नहीं कर्म की दशा है। सेवा जीवन का एक धर्म है, इस रूप में वह साधना है, इसे साधना बना लेना तो अपार स्वार्थ की पूर्ति का संकेत होगा। सेवा वह है जो प्रति दान में किसी को भी अपेक्षा न करें । निस्वार्थभाव ही सेवा के यथार्थ स्वरूप का निर्णायिक तत्व है, सेवा सदा महान रहती है इस रूप में सम्पन्न किये गये कार्यों के महत्त्व स्वयंसेवा के लिए कभी मापदंड नहीं हो सकते स्वर्ण तो स्पर्ण ही रहता है, चाहे उसे अंगूठी में ढ़ाला जाए या पैरों के आभूषण के लिए, निर्लेप भाव में की गई सेवा ही श्रेष्ठ होती है। प्राणी मात्र की सेवा का संकल्प लेकर जीने वाला मानव जीवन ही सार्थक कहलाता है।

आचार्य सम्राच श्री देवेन्द्र मुनि जी के शिष्य डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज के अलावा इस संगोष्ठी को डॉ दिव्यप्रभा जी, सुरेन्द्र मुनि, विद्वान सन्त रूपेन्द्र मुनि जी ने भी अपने विचार रखे। 15.4.1998

स्वयं पर शासन करने वाला ही सुखी 16.4.1998

आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी के वारिष्ट शिष्य एवं प्रसिद्ध जैन सन्त डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने कहा कि मनुष्य संभवत, दूसरों पर नियन्त्रण करने का अभ्यस्त होता है पर वह स्वयं पर शासन नहीं कर पाता। वस्तुतः जो स्वयं को अनुशासन में नहीं रख पाए, उसके ले सुख के सबी द्वार बन्द हो जाते हैं। महाराज श्री योगसाधना केन्द्र में समारोह के दूसरे दिन संगोष्ठी में दूसरे दिन जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने अपने अंतिम प्रवचन में कहा था कि जो अपनी आत्मा अपने मन इन्द्रियों व वाणी को संयम में रखता है वह इस लोक वं परलोक में सुखी रहता है।

उन्होंने कहा आज संयम मात्र श्रद्धा और सम्मान का विष्य रह गया है, उसकी चर्चा तो होती है पर उसका आचरण नहीं हो पाता है। भारत केवल कृषि प्रदान ही नहीं अपितु ऋषि प्रधान देश रहा है। समय-समय पर महापुरुषों ने जन्म धारण कर कोटि-कोटि जन के लिए आदर्श प्रस्तुत किये और उनकी सफलता का रहस्य संयम रहा ।

संयम साधना को आज हम खो बैठे हैं। पाश्चात्य संस्कृति के असंयम के प्रभाव ने हमें हमारे राष्ट्र और समाज को पतित अवस्था है, वह संयम हीनता का साक्षी है। संयम का रस्वादन कीजिए, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनवाणी काया का संयम अपनाकर स्वयं और दूसरों को सुखी बनाएँ। मंदिर में रहने वाला इंसान ही जीवन को सार्थक करता है । सुख बाहर की नहीं भीतर की अनुभूति है।

सुख और दुःख मनुष्य के दो पक्ष हैं। इन्हीं दो पक्षों मे उसका पूरा जीवन होम हो जाता है। वह नहीं जाना पाता कि इस रस्सा-कशी में कैसे उपरत हुआ जा सकता है। लाभ-हानि, धूप-छांव की तरह होती है। मनुष्य के सामने सुख-दुःख भी आते हैं। सच पूछा जाएं तो सुख-दुःख किसी नियंता से निर्धारित नहीं हैं। डॉ राजेन्द्र मुनी जी ने कहा कि सुख बिना दुःख की अनभूति ही नहीं हो सकती , सच में तो कोई किसी के दुःख को नहीं बटा सकता। प्रत्येक जीव को अपने हतकर्मी के फल तो भोगने ही पड़ते हैं। समभावी साधक ही इन दुःखों को अनुभूति से ऊपर उठ पाता है। जिस सूरत की चाहत में जीवन भर हम दौड़ते रहते हैं नहीं अपितु आध्यात्मिक विचारों में निहित है, हम उस भिखारी की भाँति बाहर भटकते रहते हैं जिसके स्वयं के पास ही पारस पत्थर माजूद था पर अनुभव के अभाव से जीवन कष्ट में रहा, जीवन के अंतिम क्षणों मे जब ज्ञात हुआ तो मारे दुःखों के तड़फड़ाता रहा। हम अपनी इन्द्रियों को जब तक बहिर्मुखी से अन्तर्मुखी नहीं बना

पाएंगें, जब तक सांसारिक मोह माया प्रपंचों से ऊपर नहीं उठ पाएंगे, तब तक इस सुक की अनुभूति संभव नहीं।

सत्य पारस मणि के समान 17.4.1998

उप प्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा सत्य आत्मा का निजगुण स्वभाव है। भारतीय संस्कृति की प्राचीन सभ्यता और विशेषता रही है कि अजस्त्रता शतशत शताब्दियों से यह समर्थ संस्कृति भारत के जनमानस को परिष्कृत करती रही है । यह हमारी संस्क़ति की ही देन है कि विभिन्न सम्प्रदाय, मत-मतान्तर यहां एक साथ दीक्षित होते रहे हैं। सभी का समान रूप से प्रसारित होने का अवसर मिलता है। डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने योगसाधना अनुसंधान केन्द्र आबूपर्वत में आयोजित आज तीसरे दिन धर्मसभा को सम्बोधित करते रहे थे। उन्हों ने कहा न्याय सांख्या, वैशेषिक वेदांत मीमांसा, बौद्ध, जैन आदि कितने ही दर्शन भारत भूमि पर अंकूरित, पल्लवित, पुष्पित तथा सफल होते रहे हैं। इनकी अनेकता के मूल में भी एकता बनी रही है। ऐसे अनेकानेक साम्य तत्वों में से एक हैं सत्याचरण । सत्य को इन सभी क्षेत्रों में समादर प्राप्त हुआ है। सभी दार्शनिक ने इसे जीवन का अमृत माना है।

सत्य एक ऐसी पारसमणि के समान है, जो हमने स्पर्श मात्र से ही जीवन के लोह को स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है। महराज श्री जी ने कहा कि सत्याचरण से व्यक्ति के कलुष कट जाते हैं और हमें अनुपम निखार, निर्मलता और पवित्रता आ

जाती है । उन्होंने यह भी कहा कि सत्योपासना से तुच्छ और नाहण्य व्यक्ति भी श्रद्धेय, पूज्य और उच्चकोटि में परिगणित हो जाता है ।

साध्वी दिव्यप्रभा जी महाराज ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए ने कहा कि जीवन निर्माण के लिए संयम और चिंतन एव आचरण आवश्यक है। जिसके पास संयम का बल होता है वह हर समस्या का आसानी से हल कर लेता है । संयम की नींव पर ही जीवन का अस्तीत्व टिका रहता है. उन्होंने स्पष्ठ किया कि संयम न केवल स्वयं के जीवन अपितु राष्ट्र के निर्माण में अमुल्य योगदान हो सकता है।संयम व्यक्ति को नैतिक बनाता है। नैतिकता से चरित्र बल अपार अभिवृद्धि होती है, संयम समत्व जगाता है। संयम की मानव जीवन में अधिकाधिक प्राण प्रतिष्ठा हो, ऐसे प्रयासों की आज आवश्यकता है। आज के भौतिकवाद के युग में इच्छाओं की जो अंतहीन दौड़ चल रही है इसके मूल में असंयम ही है । तनाव व विनाष आदि से बचने के लिए संयम के अतिरिक्त कोई समाधान नहीं है।

जगत को जीतने के लिए मन को वश में करना जरूरी

25.4.1998

उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने योगसाधना अनुसंधान केन्द्र आबूपर्वत में आयोजित अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य व पशु मे प्राकृतिक रुप मे कोई विशेष अन्तर नहीं। पशुजगत से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने वाला मनुष्य का अपना मन है

मानव ही नाना भांति प्रवृत्तियों का प्रतीक है, और ये प्रवृत्तियां मानव मन की सफल प्रतिनिधि है, मन की संपदा है।मन अति चंचल स्वभाव का होता है वही व्यक्ति के उत्थान पतन का मूल कारण होता है। समान अवयवो को धारण करते हुए भी की व्यक्ति महापुरुषों की कोटि में परिगणित होता है, क्योंकि जो अपना मन को जिस सीमा तक नियन्त्रित करता है, वह उतना ही उच्च स्थान को प्राप्त करता है। भारतीय मनस्वियों ने मानव मन को दर्शन की कसौटी पर रखा है। उसका विशलेषण विवेचन किया है।

भारतीय दार्शनिक योगी व मुनिगण ने मन की स्थूलवृत्तियों का नियंत्रण किया है। इस मनोनिगृह की कला का अभ्यास करने के लिए साधक निर्जन वनों, पर्वतों में खोये रहे हैं। आज के घोर भौतिकवाद के युग में साधक इस दिशा में सक्रिय है। मन तो स्वभावतः शब्द, रस, रूप, गंध, स्पर्श की ओर आकर्षित होता है. इस प्रकार जब मन विषय वन में स्वच्छंद होकर विचरण करना चाहता है तभी साधक की परीक्षा का समय आता है।

साध्वी दिव्यप्रभा जी महाराज ने इस धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिसने अपने मन को वस में कर लिया, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देवी उसके चरण चूमती है। जीवन एक संघर्ष है, इन्द्रियों का नायक मन ही है जो हमें पराजित करना चाहता है। साध्वी अनुपमा ने कहा यदि मन

एकाग्रता के साथ रहे तो मन की विजय आत्मा की विजय होगी और मोक्ष जो प्रायः दुर्लभ माना जाता है वह सर्वथा सुलभ हो जाता है।

विद्वान मुनि सुरेन्द्र ने आत्मा को बंधन में डालने वाले मन को स्थापित करते हुए इसे प्रभु भजन, स्वाध्याय व सद्वृतियों में लगाने की प्रेरणा दी । साध्वी निरुपमा और रुपेन्द्र मुनि ने भक्तिमय संगीत प्रस्तुत कर सभी को श्रद्धा से ओत-प्रोत कर दिया।

सद्गुरु व्यक्ति के जीवन का निर्माता होता है 3.5.1998

उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने योगसाधना अनुसंधान केन्द्र आबूपर्वत में आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्व पूर्ण स्थान है । सद्गुरु ज्ञान नौका पर चढ़ाकर हमें भवसागर से पार करतें हैं। यदि हम गोबिन्द का परिचय देने वाले गुरु के प्रति श्रद्धवान न बन सकें तो हमारा जीवन असफल माना जाएगा।

रात्रि का समय है, अंधकार से भूमंडल व्याप्त है, नेत्र सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भी देख नहीं पा रहें हों, सुनसान जंगल हो एक यात्री इस घने अंधकार में चल रहा हो, भीषण परिस्थितियों से उसका मन भयभीत हो रहा हो ऐसी स्थिति में एक सज्जन हाथों में सर्चलाईट लिए आए और कहे घबराओं नहीं, भय में कांपो नहीं, चलो इस प्रकाश में तुम्हारे गन्तव्य स्थल तक पहुँच जाओगे, उस समय उस पथिक को कितनी प्रसन्नता का अनुभव

होगा भी सद्‌गुरु की शरण पाकर इस संसार रूपी भयंकर सागर से पार हो सकते हैं। उन्हों ने कहा कि अज्ञान तिमिर को नष्ट करे, वही गुरु है। सद्‌गुरु की एक चिंगारी हमारे जीवन को प्रकाशमान कर देती है। उन्होंने कहा जीवन में अज्ञान की विकृति बल्ब को फ्यूज होने और विनय विवेक का शिथिल होना लाइन के टूटे होने के समान है. भगवान से भी अधिक महत्त्व गुरु को बतलाया गया है । भगवान यदि रुष्ट हो तो सद्‌गुरु उसे उबार सकता है, पर सद्‌गुर रुष्ट हो जाए तो भगवान भी उसे नहीं उबार सकता।

सद्‌गुरु के चरित्र, आचरण,व्यवहार इतने समुज्जवल होने चाहिए। जिससे प्राणियों को सद् शिक्षा उपलब्ध होती रहती है। जैसे तेल दीपक को प्रकाशवान करता है, चाबी घड़ी को संचालित करती है, भोजन शरीर को पुष्ठ करता है। वैसे ही सद्‌गुरु की ओर से जीवन में प्रगतिशीलता संभव होती है । सद्‌गुरु व्यक्ति के जीवन का निर्माता होता है।

आत्मा की मुस्कान से ही जीवन जिएँ 4.5.1998

उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने योगसाधना अनुसंधान केन्द्र आबूपर्वत में आयोजित नियमित प्रवचन आज कहा कि विश्व परिवर्तनशील है, जो कल था आज उससे भिन्न है और यह आज भी कल कुछ न्यारा होगा।

धर्म, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान सब कुछ में विकास दिख पड़ता है । इन सभी का प्रयोजन मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाना ही है लेकिन यह तभी संभव हो पाएगा, जब यह जीवन की

विराटता, व्यापकता, उसकी गरिमा व महत्व को भलीभांति पहचान ले। आज हम अपने जीवन पर पालिश चढ़ाने, रोगन चढ़ाने के काम में तभी तो कामयाब रहेंगे, जब हम जीवन को नयाब मान लें। जीवन में हजारों वर्षों के संस्कारों के बहुत गाढ़े रंग चढ़े हुए हैं, हम उस पर नया रंग चढ़ाना चाहते हैं। यह संसार बड़ा जन्तुआलय है, जिसमें भांति-भांति के प्राणी विद्यामान हैं। इसमें मानव एक अद्भुत प्राणी है, जो अपनी अनेक विशेषताओं के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह जीवन आत्मा का मोक्ष मार्ग है।

विश्व के सभी दार्शनिकों ने मानव जीवन को देवानुप्रिय कहा है। मानव जीवन के लिए देवता भी लालायित रहते हैं। ऐसे श्रेष्ठ मानव जीवन को उसके वास्तविक रूप में बनाये रखना मानव का ही दायित्व है। जीवन को जीवन की मुस्कान से परिपूर्ण रखा जाए, जहाँ जीवन में ईमानदारी, सच्चाई, शिष्टता, सभ्यता, नियम व मर्यादाओं का पालन किया जाता है , वही सार्थक जीवन है। द्यूतकर्म, मांसाहार, चौर्य कर्म. मद्यपान, वेश्यागमन, परस्त्रीगमन, जीव हिंसा आदि दुष्कर्म मानव जीवन की अनीतिमय बना देते हैं। जीवन की मुस्कान को यह मलीन कर देते हैं। अतः इनसे हमें बचना चाहिए ।

आत्मा का मूलभूत गुणों सत्य अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अल्तेय, क्षमा, दया, संयम आदि के पालन की ओर से ही आत्मा की श्रीवृद्धि की जा सकती है।

आप अपने जीवन को मुस्कान के गुणों से भरिये, जो शुभ मार्गों पर आपको गतिशील रखेंगे एवं आपको ऊपर उठाएंगें। आप चलेंगे तभी आपका भाग्य चलेगा। आप बैठ जाएंगे तो आपका भाग्य भी शिथिल हो जाएगा, सर्वांगपूर्ण जीवन की सच्ची मुस्कान जीवन की अमरता प्रदान करेगी। सभा में इसके पूर्व डॉ दिव्य प्रभा, सुरेन्द्र मुनि, साध्वी अनुपमा व रुपेन्द्र मुनि जी ने भी अपने विचार रखे।

जीने की कला संयम से ही सुलभ 5.5. 1998

उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने योगसाधना अनुसंधान केन्द्र आबूपर्वत में आयोजित धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतभूमि सदा ही दर्शन, चिंतन, मनन की भूमि रही है। दर्शन के औचित्य पर जो खरा उतरता है वही श्रेयस्कर माना जाता है, शेष त्याज्य माना जाता है, यही कसौटी आज भी मान्य है। समय जीवन और जगत दर्शन के प्रभाव में है और पर्याप्त मंथनोपरांत नीतियों को स्वरूप देने का महान कार्य हमारे मनीषियों की ओर से सम्पन्न हुआ है। नीतियों का कोष ही आदर्श मानव जीवन की कल्पना के रूप में साकार हो गया है।

मात्र दैनंदिनी व्यवहार व्यापार मात्र ही से मानव जीवन की सार्थकता नहीं आंकी जा सकती, दार्शनिकों का मत रहा है, कि दोषों और विकारों से रहित होकर जीना ही सच्चा मानव जीवन है। विकृतियों से संघर्ष करते हुए जो जीता है, सिंह की भांति भी निर्भीक है और अनीति, अन्याय, अत्याचार, और अनाचार को

ध्वस्त करने के लिए तत्परतापूर्वक जो अपनी समग्र शक्ति को प्रयुक्त करता रहता है, उसी का जीवन सार्थक है। दुःख, दैन्य, कलह को जीत लेता है, वही इस लोक-परलोक दोनों में सुखी रहता है। समय-समय पर महापुरु, ने अपने आचरण के उदाहरणों से कोटि-कोटि जन के कल्याण के लिए इस दिशा में आदर्श उपस्थित किए हैं। संयमहीनता न होती तो आज का भारतीय सुखी होता। हमारा प्यारा देश प्रसन्नता और यश से पल्वलवित कुसुमित और सुरभित उद्यान होता। पाश्चात्य संस्कृति ने हमें रसातल की ओर ढ़केल दिया है। विषयानुरागी बनकर हम हमारे मौलिक स्वरूप को खो चुके हैं।

सभा में इसके पूर्व डॉ दिव्य प्रभा, सुरेन्द्र मुनि, साध्वी अनुपमा व रुपेन्द्र मुनि जी ने भी अपने मंगल विचार प्रस्तुत किये।

कला मानव जीवन के अनन्य संगीनी रही है। कला ने ही जीवन को आनन्दमय, सरल और मधुर बनाया है। संस्कृति के विकास के साथ कला प्रखर प्रांजल परिष्कृत और पुष्ट होती चली है। आदिम काल में मानव जीवन के विशिष्ट स्वरूप से अनभिज्ञ था, कला और संस्कृति अपने नेत्र पूरी तरह खोल भी नहीं पाई थी, तभी जीवन के महान कलाकार युगादि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का आविर्भाव हुआ था, भगवान ने जीवन में कलाओं का समावेश कराया था। पुरुषों के लिए 72 कलाएं और स्त्रीयों के लिए 64 कलाएं विकास पाने लगी थी, मात्र आहार-विहार या भौतिक उन्नति ही जीवन की सार्थकता नहीं । मनुष्य स्वभावत

दूसरों पर नियंत्रण करने का अभ्यस्त होता है., पर वह स्वयं शासन नहीं कर पाता, यह कठिन कार्य है। आत्मानुशासनबद्ध व्यक्ति ही शक्तिशाली होता है। जो स्वयं को अनुशासन में नहीं रख पाता उसके लिए सुख के सभी द्वार बन्द हो जाते हैं ।

योग साधना देश की पुरातन परम्परा 10.5.1998

पूर्व केन्द्रिय संचार मन्त्री एवं क्षेत्रिय सासंद बूटासिंह ने कहा कि योग साधना देश की पुरातन परम्परा है. जिसके उत्थान एवं विकास के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

कुम्हारवाड़ा में योग साधना एवं अनुसंधान केन्द्र एवं अन्न-जल मंदिर के उद्घाटन समारोह में उपस्थित लोगों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए उन्होंने यह बात कही। उन्हों ने कहा कि योग के माध्यम से आत्मिक गुणों के विकास का मार्ग मिलता है। यही कारण है कि आज पूरी दुनिया के लोग भारतीय योग विधाओं की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। सिंह ने कहा कि समाज में बढ़ती अशांति एवं मानसिक तनाव को दूर करने के लिए योग एव आध्यात्मिक साधना ही श्रेष्ठ माध्यम है, जिसे प्रचीनकाल की भाँति देश में पुनर्जीवित किये जाने के प्रयास होने चाहिए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं उदयपुर के सांसद शांतिलाल चपलोत ने कहा कि दान, तपस्या एवं महात्माओं का सानिध्य पूर्व जन्म के सुयोग से ही प्राप्त होता है। अतः ऐसे प्रत्येक अवसर का लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने कहा जो कुछ भी है वह मानवमात्र का है, समाज का है,

यह मानकर ही सुख एवं शांति का मार्ग ढूंढा जा सकता है। उन्होंने आध्यात्मिक योग साधना पर बल देते हुए कहा कि मूरे मनोयोग से यदि आध्यात्म एवं योग का अभ्यास किया जाए तो मनोविकारों पर विजय पायी जा सकती है।

चपलोत ने कहा कि जब देश अजाद हुआ तो प्रति हजार व्यक्ति पशुधन की संख्या 350 थी। जो 50 वर्षों बाद आज की स्थिति में बढ़ने की बजाय घटकर 124 रह गई है, उन्होंने इसे विदेशी चाल करार देते हुए कहा कि वह लोग सुनोयोजित ढ़ंग से देस के पशुधन नष्ट करने में लगे हुए। आगामी सत्र में इस समस्या को पुरजोर तरीके से उठाया जाएगा। उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने कहा कि जिस तरह आत्मा के बिना शरीर का की मुल्य नहीं तथा शरीर के लिए अन्न और जल आवश्यक है, इसी प्रकार आत्मिक शांति प्राप्त करने के लिए योग एवं अध्यात्म की आवश्यकता है. अपने सम्भोदन में श्री गौतम मुनि ने कहा कि स्वयं का संरक्षण करते हुए मन का ,तप का संरक्षण हो ताकि ज्ञान की समस्त गुत्थियों को सुलझाया जा सके। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र स्वाध्याय से ज्ञान के मर्म को पहचानने की दिशा में प्रयासरत रहेगा। कार्यक्रम की समाप्ति का मुख्य अतिथि बूटा सिंह ने सांसद शांतिलाल चपलोत के साथ योग साधना एवं अनुसंधान केन्द्र का उद्घाटन किया।

इस से पूर्व संचार मन्त्री एवं क्षेत्रिय सांसद बूटासिंह के जीतने के बाद पहली बार यहां आने पर उनके समर्थकों ने सांसद का उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

विभिन्न विभूतियों को सम्मानित किया गया 11.5.1998

उत्कर्ष कार्य करने एवं उल्लेखनीय सेवाएं देने के लिए माउंट आबू में कुशल राजनीतिज्ञों और पत्रकारों को सम्मानित करते हुए।

यहाँ स्थित योग साधना अनुसंधान केन्द्र के उद्घाटन के पश्चात जैन समाज ने कुशल राजनीतिज्ञ, श्रेष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवकों का विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लम्मानित किया गया। पूर्व संचार मन्त्री बूटा सिंह एव विधान सभा अध्यक्ष शांति लाल चपलोत को कुशल राजनीतिज्ञों के रूप में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए एवं अनिल कुमार ऐरिल को श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर बूटासिंह का सम्मान जैन समाज के उद्घाटन समारोह के स्वागताध्यक्ष जयसिंह जैन ने किया एवं शांतिलाल चपलोत का ईश्वरचन्द्र डांग ने । इस अवसर पर अखिल भारतीय स्तर के उद्यमियों, कुशल प्रशासकों को भी सम्मानित किया गया। दिल्ली के मनोहर लाल जैन, ठंडीराम

जैन, सकुनराज धारीवाल, महेष जैन, जोधपुर के उद्यमी अजय टैक्सटाईल, मेहता मोटर्स एवं एस. आर. इन्डस्टरीज के मालिक एस. आर मेहता एडवोकेट रोशनलाल जैन बार एसोसिएशन उदयपुर के अध्यक्ष गोमई लाल जी कोठारी, माऊँट आबू के उपखंडीय अधिकारी प्रवीण गुप्ता, पुलिस उपअधीक्षक चैनसिंह, अतिरिक्त पुलीस अधीक्षक कृपाशंकर गौड़ को सम्मानित किया गया।

दानदाताओ ने अन्न-जल केन्द्र के लिए राशि भेंट की, जिसमें गणपत जी सांड 31000, सकुनमल जी 31000, विमल जी जैन 21000, चेलाराम जी जैन की स्मृति में उनके पुत्र महेष जैन 11000, होटल उद्यमी जयसिंह जैन ने 11000 की राशि भेंच की, इनके अलावा भी अनेक दान दाताओं ने दान राशि घोषित की।

उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज, डॉ दिव्य प्रभा जी, सुरेन्द्र मुनि जी, व्याख्यानी गौतम मुनि जी, साध्वी अनुपमा जी, साध्वी निरुपमा जी, स्वेता जी व रुपेन्द्र मुनि जी भी उपस्थित थे। भक्ति संगीत आदि के विशेष कार्य प्रस्तुत किये गये। राष्ट्रीय कवि सुरेन्द्र वैरागी मंदसौर ने कार्यक्रम का संचालन किया। उनकी कविता धर्म प्रेमियों चलो-चले हो गई। माटी चंदन, जिनका ध्यान करो और ‘जिन्हें पूजना है सदियों से गौतम और महावीर का देश मांस निर्यात करे, ये अपने हिन्दोस्तान नहीं

‘ ने उपस्थित जन-समूह को भाव-विभोर कर दिया। वैरागी ने कहा कि यह शर्म की बात है कि प्रतिदिन 6000 पशु काटे जा रहे हैं, जिनका देश से निर्यात हो रहा है। उप प्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने केन्द्र की ओर से सब का आभार व्यक्त किया।

धर्म संस्कारों के कारण भारत में ज्यादा शांति 26.8. 1998

आचार्य श्री देवेन्द्र मुनिजी के सुशिष्य डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने उदयपुर स्थानक में कहा कि धर्म संस्कारों की वजह से भारत में वैभव होने के बावजूद मानसिक शान्ति ज्यादा है। भामाशाह मार्ग स्थित पंचायती नोहरे के सभागार में मंगलवार को धर्मसभा में राजेन्द्रमुनि ने कहा कि अमरीका में सर्वाधिक आत्म हत्याओं की घटनाएं ये जाहिर करती है कि सिर्फ पैसा , साधन, रोटी कपड़ा, मकान आदि हो जाने मात्र से शान्ति नहीं मिलती।

उन्होंने कहा कि आत्मा के अस्तीत्व पर विश्वास करने वाला आस्तिक होता है और देव, गुरु एवं धर्म पर सम्यक श्रद्धा रखने वाला ही सम्यक दृष्टि कहलाता है सम्यक दृष् व्यक्ति सुख तथा दुःख दोनों को समभाव से सहन कर लेता है। वह संसार को अनासक्त बनकर जीता है। के.सी. जैन (दिल्ली) ने भी विचार रखे। संचालन कन्हैयालाल लोढ़ा ने किया।

आचार्य देवेन्द्र मुनि जी के स्वास्थ में सुधार जारी है। पर्युषण तक आचार्य श्री धर्मसभा में उपस्थित हो सकेंगे। उनके शीघ्र स्वास्थ लाभ के लिए णमोकार महामन्त्र का जाप का क्रम जारी है। सुंदर बाई सिंघवी ने मंगलवार को 33 उपवास का

संकल्प किया। शनिवार से आरंभ होने वाले पर्यूषण महापर्व की तैयारियां जोरों से चल रहीं हैं।

स्थानीय हूमड़ भवन में अपने प्रातःकालीन प्रवचन में मुनि अभिनन्दन सागर जी ने पर संयोग से दुःखी संसार पर प्रवचन दिया। उन्हों ने कहा कि आज के इस युग में मानव मात्र दुःखमय जीवन यापन कर रहा है क्योंकि शुद्ध आचार विचारों का अभाव सा है।व्यक्ति प्रभुता को उपलब्ध करने के लिए आत्मनिर्णय की क्षमता नहीं रख पाता है और प्रभुता पाने के बजाये सम्प्रदायवाद फैलाने में ही रह जाता है।

धर्मविहीन जीवन में सच्चा सुख नहीं मिलता 27.8.1998

पंचायती नोहरे में बुधवार की धर्मसभा में उप प्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा धर्म विहीन जीवन में सच्चा सुख नहीं मिल सकता। मन और आत्मा के लिए धर्म जरूरी है।

उन्होंने कहा कि धर्म सदा निस्वार्थ होता है जीवन कोऔर सुखी रखने धर्म का आचरण हमेशा करना चाहिए। इससे पूर्व नरेश मुनि जी ने संघर्ष को अशान्ति का व समर्पण को शान्ति का कारण बताया। संचालन रोशनलाल चव्हाण ने किया।

दीर्घ तपस्याओ का क्रम जारी है, बुधवार को सुंदर बाई सिंघवी ने 35 वें व्रत का प्रत्याख्यान व बूरी भाई सिंघवी ने 20 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक जप–तप पूर्वक मनाया गया

जैन धर्म के 23 तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के सानिध्य में मनाया गया।

इस अवसर पर तारक गुरु जैन ग्रंथालय में प्रातः 9 बजे श्री सुरेन्द्र मुनि जी ने सामूहिक जाप कराया। तत्पश्चात् जैन भजन सामूहिक रूप में गाये गये। समारोह में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज का 45 वां जन्मदिन भी मनाया गया।

समारोह की अध्यक्षता अरूण सुखाडिया ने की। मुख्य अतिथि महेष जैन थे। समारोह में मदन मुनि, नरेश मुनि, प्रवीण मुनि, साध्वी संतोष कुँवर, संघ अध्यक्ष औंकार सिंह सिरोया, महेन्द्र तलेसरा, साध्वी चंदनबाला, विचक्षणा आदि ने विचार रखे। दिलीप धींग ने णमोकार काव्यपाठ किया। संघ अध्यक्ष सिरोया ने अतिथियों का स्वागत किया।

प्रवक्ता दिलीप धींग ने बताया कि अगामी 4 जनवरी को मुनि अंबालाल का स्वर्गारोहण दिवस स्थानीय कुम्हारवाड़ा स्थित अम्बा गुरु शोध संस्थान में सामायिक दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

तीर्थंकर अवसरवादी नहीं, उदारवादी होते हैं 28.12.1998

जैन धर्म के 23 तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक दिवस आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के सानिध्य में जप-तप पूर्वक मनाया गया। साथ ही आचार्य श्री जी ज्येष्ठ

शिष्य उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज का 45 वां जन्म दिन भी मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री जी ने कहा तीर्थंकर जैन धर्म का परिभाषिक शब्द है, जिसका सबंध धर्मशासक एव तीर्थ संस्थापक से है । तीर्थ यानि घाट और कूल (किनारा) साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका धर्म तीर्थ के चार स्तंभ हैं।

आचार्य जी ने कहा तीर्थंकर अवतारवादी नहीं उतारवादी होते हैं। सामान्य जीव साधना का पथ अपनाकर तीर्थंकर जैसे उत्कृष्ट जीवन प्राप्त कर सकता है। उन्होंने बताया कि 24 तीर्तंकरों में से 23 वें भगवान पार्श्वनाथ तथा 24 वें भगवान महावीर स्वामी ऐतिहासिक महापुरुष तीर्थंकर माने जाते हैं। अन्य 22 तीर्थंकर प्रागैतिहासिक कहे गए, क्योंकि इतिहास की पहुँच महज 5000 वर्ष पूर्व तक ही है । आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा कि भगवान महावीर के माता-पिता भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के अनुयायी थे। तथागत पहले बुद्ध ने भी भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा में ही दीक्षा अंगीकार की थी। आचार्य़ श्री जी ने अपने शिष्य डॉ राजेन्द्र मुनि को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए कहा कि मुनि श्री का ज्ञान, दर्शन, चारित्र में आगे बड़े, खूब प्रगति करे तथा संघ शासन की प्रभावना करे। अरूण सुखाडिया की अध्यक्षता और महेष जैन दिल्ली के मुख्य अतिथ्य में हुए समारोह में उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्र मुनि ने कहा कि धर्म जीवन को शांती देता है । वस्तु का मूल स्वभाव धर्म है प्रेम, सत्य, क्षमा, अहिंसा

धर्म आदि के लक्षण हैं। भगवान पार्श्वनाथ ने भयंकर कष्टों, उपसर्गों मे समता व सहिष्णुता को नहीं छोड़ा। ऐसी समता समाज में आ जाए तो कई समस्याओं का समाधान हो जाए।

धर्म ही मानव की रक्षा करता है

जैन सभा भवन फरीदकोट में महाराज श्री उपप्रवर्त्तक डॉ राजेन्द्रमुनि जी ने प्रवचन सभा में कहा, कि समता की साधना से ही जीव आत्म कल्याण के मार्ग को प्राप्त कर सकता है। संसार का प्रत्येक प्राणी आदि, व्याधि. उपाधि इन तीनों तापों से पीड़ित है। इनसे मुक्त होने की अकांक्षा रखता है। लेकिन मुक्त नहीं हो पाता है।

उन्हों ने फरमाया कि प्रत्येक परिस्थिति में मानव को श्रद्धावान होकर सभी के प्रति समभाव रखना चाहिए। वास्तविक स्वरूप को बिन समझे सुख की कल्पना मात्र आकाश कुसम वत्त है। मानव जन्म मरण की इस परम्परा मे अनादि काल से व्यथित है, धर्म ही इन सबसे छुटकारा दिलाने में सक्षम है। आत्मा पर शरीर का ही पहला आवरण है व हमें इस अवरण को दूर करना है।

सभा में इस से पूर्व ध्यानयोगी रुपेन्द्र मुनि जी ने मंगलाचरण करते हुए कहा कि ध्यान के अभाव में मानव जीवित मुर्दे की तरह है जो मात्र शरीर का ही पोषण करता है ।

ध्यान ही आत्मा है, सभा के अंत में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी ने कहा कि वस्तु का सार तत्व है, तत्व के बिना प्रत्येक

पदार्थ शुन्य है । जीवन भी एक तत्व है। इसलिए हमें प्रत्येक पदार्थ के तत्व को जानना चाहिए. सभा में सामूहिक जप तप की अराधना की गई।

जीवन का लक्ष्य त्याग होना चाहिए

जीवन का लक्ष्य त्याग होना चाहिए, वासना अच्छे भले इन्सान को शैतान बना देती है और साधना पतित कर देती है । वासना का अर्थ है आत्मा से हटकर शरीर की ओर भागना और संसारी भोगों में दौड़ना और साधना का अर्थ है आत्मा को पहचानना, सत्य के निकट रहना। यह विचार जैन सभा भवन में डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने प्रवचन सभा में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि मनुष्य अगर नश्वर वासना पर काबू प्राप्त कर ले तो नर्क स्वर्ग दिखाई देने लगेगा, मनो विकारों से छूटकर ही व्यक्ति मुक्ति का मार्ग का वरण कर सकेगा। शरीर के तल पर जीने वाला आत्मा का अनुभव नहीं कर सकता। यद्यपि वस्तु विकारी नहीं होती, अपितु उसके प्रति मन ममत्व व असक्ति पूर्ण विचार ही विकार को जन्म देती हैं।

उन्होंने कहा कि संसार में रहना बुरा नहीं किन्तु मन में संसार को बसा लेना ही बुरा है। पानी में तैरने वाला संसार को पार कर लेता है लेकिन उसमें डूबने वाला वहीं मर जाता है। हमें संसार सागर में डूबना नहीं, तैरना है। जीव में प्रथम व अन्तिम सत्य मृत्यु तो मात्र पड़ाव है। हम अच्छा जीवन जीने का प्रयत्न तो

करते हैं पर जीना नहीं चाहते। सभा के अन्त में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी ने मंगलपाठ प्रदान किया।

शांती बाहर नहीं शरीर के भीतर है

जैन स्थानक में प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा कि रात-दिन, धूप-छांव, सर्दी-गर्मी जिस प्रकार आते जाते रहते हैं उसी तरह दुःख- सुख भी जीवन में आते जाते है। न सुख से खुश होना है, न दुःख से निराश होना है। आज जिन पदार्थों में हम सुख महसूस करते हैं कल उन्हीं पदार्थों में दुःख मिलने लगता है।

इस अवसर पर सुरेन्द्र मुनि जी ने कहा कि शांती बाहर नहीं शरीर के भीतर है । इंसान दिन रात शांति को बाहरी पदार्थों मे खोजता रहता है।

हम गुणो के उपासक बनें गुणी बनकर

हमें जीवन में गुण दृष्टि को धारण करना चाहिए, जिसमें जो भी गुण नजर आए उसे अपना लें और अवगुणों को छोड़ दें । संसार में गुण अवगुण भी हैं । यहां न गुणियों का अभाव है न दुर्गुणियों का। यहां आग लगाने वाले भी हैं तो आग बुझाने वाले भी हैं । यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि राम है तो रावण भी रहेंगे। कंस है तो कृष्ण भी रहेंगे। जब आप उपवन में जाते हैं, वहाँ फूलों के साथ-साथ कांटे भी नजर आते हैं। दृष्टि अपनी-अपनी है । जो विवेकी पुरुष है, वे सद्गुणों के मोती ग्रहण कर लेगें। हमारी दृष्टि

सदा हंस के समान रहनी चाहिए, जो कंकरों के ढ़ेर में से मोती चुग लेता है और काक दष्टि वाला सुगंध में से गंदगी ड़ूंढ़ लेता है।

विनय के बिना संभव नहीं है धार्मिक जीवन

विनय समस्त धर्मों का अधार है। संसार के सब धर्म विनय गुण को अपनाते हैं। यह धर्म का आवश्यक तत्व है। जैन धर्म में तो विनय को अत्यन्त महत्ता प्रदान की गई है। जब तक मानव में विनय भाव नहीं आता तब तक उसका जीवन धर्ममय नहीं बन पाता। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि साधक भी साधना कि विनय से ही सफलता प्राप्त करता है। इस से घर परिवार समाज में शांति की स्थापना होती है। यश कीर्ति में वृद्धि होती है। आगामी वैर-विरोध भाव समाप्त हो जाता है। उन्होंने कहा जिस प्रकार जड़ के बिना वृक्ष नहीं टिकता उसी प्रकार विनय के बिना धर्म भी उपस्थित नहीं होता। विनय कईं प्रकार की होती है। यथा मन का विनय, काया का विनय। जब तक मन में विनय भाव नहीं आते तब तक वाणी व काया में विनय प्रकट नहीं हो सकता। पहले भारतीय परिवारों में सुबह उठकर माता-पिता व गुरुजनों के सन्मुख नमस्कार करने की परम्परा थी।

प्राण के अभाव में जीवन की कल्पना असंभव

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि जीवन में सब कुछ चला जाए, किन्तु धर्म की सदा ही रक्षा करनी चाहिए। धर्म की खातिर राजा

हरिश्चन्द्र, भगवान राम, नल और दमयंती आदि ने अनेक कष्ट सहन किये, धर्म जीवन में प्राण के समान हमारी रक्षा करता है। उन्हों ने कहा कि प्राण के अभाव से जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। सम्पूर्ण शरीर स्वस्थय ही इन्द्रियां पूर्ण वेग में हैं। मगर प्राण के अति होने पर सभी को स्वतः अन्त हो जाता है। उन्होंने कहा धर्म नींव की तरह जीवन महल को टिकाए रखता है। जिस भवन की नींव कमजोर होगी तो वह लम्बे समय तक टिक कर नहीं रहता। धर्म संख्या में एक की तरह है बिन्दु लगाने पर संख्या की गणित हजारों से लाखों करोड़ों में हो जाती है। लेकिन एक के मिटने पर सारे बिन्दु शून्य हो जाते हैं। उन्होने उदाहरण देते हुए कहा राजा ने स्वप्न में अपने राजमहल में शक्ति सरस्वती स्वस्थ्य लक्ष्मी आदि देवियों को निकलते हुए देखा तो दंग रह गये। किन्तु राजा ने धर्म को जाते देखा तो रोक लिया,परिणाम स्वरूप सभी देवियां वापिस लौट आई, पूछने पर पता चला कि सभी देवियों के स्वामी धर्म देवता राजा के महल में विराजमान हैं।

पशु पक्षी भी निभाते हैं अपना कर्तव्य

मानव का मुल्य उसके कर्त्तव्य के निर्वाह करने में है। कर्तव्य हीन मुनुष्य पशु समान है। कर्तव्य का पालना इतना असान नहीं है। यह क्रिया बचपन से आरंभ होकर अंत तक बनी रहती है। कोई भाग्यशाली ही इसका निर्वाह कर पाता है। यह विंचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जितने भी वशिष्ट पुरुष हुए हैं वह कर्तव्य निष्ठा में जीवन

यापन करते रहे हैं। वह दीपक की तरह स्वयं भी प्रकाशित होते हैं और अन्य को भी प्रकाशमान करते हैं।

रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण नहीं जाए को अपना सिद्धांत बनाकर जीवन जीने वाले ही सफल बना पाते हैं। मानव तो क्या पशु पक्षी भी अपना कर्तव्य निभाते हैं। कर्तव्य मात्र शरीर का ही नहीं अपितु आत्मा का भी होना चाहिए। माता-पिता, गुरु, बहन-भाई आदि के प्रति हमारा भी कर्तव्य है कि कष्ट सहकर भी निभाना चाहिए। आज कर्तव्य हीनता की भावना से मनुष्य स्वार्थी हो गया है।

धैर्यवान व्यक्ति हारी हुई बाजी जीत जाता है

प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि मानव को जीवन के कठिन परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना चाहिए। धैर्य उस कवच की भांति है जो खतरे के समय में भी जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है। धैर्य़ एक ऐसा मानवीय गुण है जो समस्त गुणों को बने रखता है।

उन्होंने कहा कि धैर्यहीन मानव छोटे-छोटे कष्टों में भी विचलित हो जाता है। धैर्यवान आत्मा जो कार्य हाथ में लेती है उसे मंजिल तक पहुँचा देती है। वह आए हुए विघ्न बाधा से कभी भयभीत नहीं होती सदा साहसी बन अपने लक्ष्य को पाता है। चाहे संसार के कार्य हों, चाहे साधना के दोनों ही के लिए धैर्य की नितान्त आवश्यकता है।

धैर्यवान हारी हुई बाजी को भी जीत लेता है । इसके विपरीत धैर्यहीन जीती हुई बाजी भी हार जाता है। भगवान महावीर,राम, कृष्ण व पार्श्वनाथ व नानकदेव आदि सभी धैर्यवान महापुरुष थे, जिनके जीवनकाल की साधना में अनेक कष्ट विघ्न बाधाएं आईं, दानवों ने देवों को कष्ट दिए पर वे पहाड़ की भाँति अडिग रहे।

हमें भी उन महापुरुषों के जीवन से शिक्षा ले एवं साहस बनाए रखें। सभा में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने संयम का महत्व बताते हे मानव को सदा संयमशील बनने की प्रेरणा दी।

हमें सदा दूसरों का भला सोचना चाहिए

प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि धर्म वाणी श्रवण करने का यही लाभ है कि हम सभी के साथ अपने जैसा व्यवहार करना सीख लें। इंसान का मन अपने लिए तो सुख सुविधा की तमन्ना रखता है मगर दूसरों को दुःखी देखना चाहता है।

मुणि जी ने एक उदाहरण देते हुए कहा कि एक भक्त ने शिव जी की उपासना की, शिव जी ने उसे वरदान देते हे कहा कि तू जो चाहेगा वो तुझे प्राप्त होगा परन्तु तेरे पड़ोसी को उस से दुगणा प्राप्त होगा। भक्त ने अपने लिए मकान, दूकान, सोना चांदी आदि की मांग करता है तो पड़ोसी को यह सभी वस्तुएं दुगणी प्राप्त होगीं, जिससे देखकर वह परेशान रहने लगा। अंततः

उसनें वस्तुएं मांगने के विपरीत विचार वस्तुएं मांगने का निर्णय लेकर अपने को दारिद्र बना डाला व पड़ोसी को महा दारिद्र देखकर प्रसन्न होने लगा। मुनि जी ने फरमाया हमारे भीतर ईर्ष्या आदि के जो दुर्गुण हैं उसी के कारण हमारा पतन होता रहता है.। इसलिए हमें सभी के लिए मंगल कामना करनी चाहिए व सभी को अपना मान कर चलना चाहिए।

दूसरों को जीतने के प्रयास में जीवन की बलि चढ़ा देता है मनुष्य

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि मानव जीवन भर एक-दूसरे को जीतने के प्रयास में जीवन की बलि चढ़ देता है। जिसका परिणाम शून्य रहता है । वह अपने मन व इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता, उसकी सदा पराजय होती है। बस कुछ साधन सम्पन्न होकर मन का दास बना रहता है। मुनि जी ने सिंकन्दर का उल्लेख करते हुए कहा कि विश्वविजेता बनकर भी वह अंतिम समय हताश-निराश था। उसे अपना कोई नजर नहीं आता था। वह जिस अपार धन-दौलत को इकट्ठी करता था, वह भी उन्हें चंद सांसें नहीं दे पाई। अंततः खाली हाथ ही जाना पड़ा।

ईंसान अपने मन का गुलाम बनकर नाना प्रकार के अत्याचार करते हुए अपना जीवन गुजार देता है। इसलिए भगवान महावीर ने कहा है कि इन्द्रिय विजेता बनो। अपनी इन्द्रियों को वश में रखना सिखो, जो अपने मन को जीत लेता है, वही सच्चा विजेता होता है।

आज के इस युग में स्वभाव को वश में रखने के कारण मानव जीवन भर कष्ट को आमन्त्रित करता रहता है। घर परिवार व समाज की व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो गहीं हैं। तनाव से मनुष्य स्वयं भी अशान्त रहता है और दूसरों को भी अशांति देता है।

सभा में युवा मनीषी सुरेन्द्रमुनि जी ने शास्त्र वाचन करते हुए महावीर के सिद्धांतो का उल्लेख किया, जिनके पावन प्रवचनों से अधर्मी-धर्मी प्राणी पुण्य आत्माएं बन गई। अंत में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने मंगल वचन व व्याख्यान दिए। महामन्त्री सुरेन्द्र जैन ने 3 अगस्त को गुरु सुरेन्द्र मुनि की जयन्ती मनाने की घोषणा की ।

धर्म ही मानव की रक्षा करता है

यह विचार फरीदकोट स्थानक के प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि समता साधना से ही जीव आत्म कल्याण के मार्ग को प्राप्त करता है। संसार का प्रत्येक प्राणी आदि व्याधि उपाधि इन तापों से पीड़ित है। इनसे मुक्त होने की आकांक्षा रखता है लेकिन मुक्त नहीं हो पाता है।

उन्होंने फरमाया कि प्रत्येक परिस्थिति में मानव को श्रद्धावान होकर सभी के प्रति समभाव रखना चाहिए। वास्तविक स्वरूप को बिन समझे सुख की कल्पना मात्र आकाश कुसुमवत है। मानव जन्म मरण की परम्परा से अनादिकाल से व्यथित है। धर्म

ही इन सब से छुटकारा पाने में सक्षम है। आत्मा पर शरीर का ही आवरण है व हमें इस आवरण को दूर करना है।

सभा में इससे पूर्व रुपेन्द्र मुनि जी ने मंगलाचरण करते हुए कहा कि ध्यान के अभाव में मानव जीवन मुर्दें की तरह हैं जो मात्र शरीर का ही पोषण करता है।

ध्यान ही आत्मा है। सभा के अंत में उपाध्य़ाय श्री रमेश मुनवि जी महाराज ने कहा कि वस्तु का सार तत्व है, तत्व के बिना प्रत्येक पदार्थ शून्य है। जीवन भी एक तत्व है। इसलिए हमें प्रत्येक पदार्थ के तत्व को जानना चाहिए । सामूहिक जप-तप की अराधना की गई।

जीवन में दुराचार को छोड़ सदाचार अपनाएं।

सुगंध, सौरभ सुवास ऐसे शब्द जिनका नाम लेने से ही मानव मन को आनन्द की अनुभूति होती है, सुगंधित तत्वों के प्रति समस्त जीवधारियों के मन में एक अजब गजब का आकर्षण रहता है, इसी आकर्षण के कारण जीव ,जन्तु कीट, पतंगे भी खींचे चले जाते हैं। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने प्रवचन सभा में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि सुगंध को हर कोई पसंद करता है। इसके विपरीत दुर्गन्ध को की नहीं चाहता। भयंकर अजगर, जहरीले सांप भी चंदन पर लिपटे हुए रहते हैं।

इसके विपरीत जिन पेड़-पोधों पर सुवास नहीं होती वह खाली पड़े रहते हैं। मनुष्य तो क्या जीव, जन्तु भी उन्हें

पसंद नहीं करते। यह तो बाहरी सुगंध की चर्चा है। मानव के भीतर भी सदाचार दुराचार की सुगंध-दुर्गंध का निवास होता है। सदाचार की अपनी ही सुवास होती है जिसे सभी चाहते हैं।

हमारा जीवन गुणों का गुलदस्ता बने

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि चिरकाल से ही मानव सुख-शांति की खोज में प्रयत्नशील रहा है। वह रात दिन प्रयत्न करता रहता है लेकिन एक इच्छा पूर्ण हुई नहीं उससे पूर्व ही दूसरी जागृत हो जाती है। यही काम जीवन भर गतिमान रहता है। हमारा जीवन गुणों का गुलदस्ता बने, इसमें सद्गुण के फूल खिलते रहें, जीवन में सदा सत्कर्म को करने एव दुष्कर्म को छोड़ने का लक्ष्य लेकर चलने वाला इस भव में एव परभव में सदा सुखी सम्पन्न रहता है।

इन्सान की भावना ही उसका उत्थान और पतन कराती हैं

जो व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से चाहते हैं, वही व्यवहार हम भी दूसरों के साथ प्रयास करें। जीवन में भावना का बड़ा गहरा महत्व है। इंसान की बावना ही इंसान का उत्थान एव अशुभ भावना पतन कराती है। मन के विचारों का असर तन पर व क्रियाओं पर भी आवश्य पड़ता है।

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि सभी धर्म गुरुओं एवं महापुरुषों ने मन को निर्मल पवित्र बनाने का संदेश दिया है । शेर के साथ

बकरी, चूहे के साथ बिल्ली, नेवले के साथ सांप सभी उपस्थित रहते हैं।

लोभ को संतोष से जीता जा सकता है

भारतीय संस्कृति में प्रारंभ से ही त्याग एवं अपरिगृह वृति को महत्व दिया जाता रहा है। यहां पर बड़े-बड़े सरमाएदार एवं धनपतियों से भी बढ़कर संत- महात्मा को पूज्यनीय माना गया है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि धनवानों को भी उनकी उदारता व दानवृत्त् के कारण ही महत्व मिला है। महावीर ने कषाए के चार भेद बतलाएं हैं, क्रोध, मान, माया लोभ ये दुर्गन्ध ही मानव को संसार भ्रमण करने का मार्ग बतलाते हैं। महाराज श्री जी ने लोभवृत्ति को दुःख का मूल कारण बताते हुए कहा कि बिना त्याग एवं संतोष को अपनाएं जीवन कभी भी शांति को उपलब्ध नहीं कर सकता।

लोभ पाप का मूल कारण रहा है, इस लोभ के चलते बड़े-बड़े युद्ध-संग्राम हुए हैं। भाई-भाई में , पिता-पुत्र में, सास-बहू में यही लोभ मन भेद पैदा करता है। मन की अनन्त तृष्णा पदार्थों से कभी संतुष्ट नहीं हुआ अपितु जितने पदार्थ होते हैं, मानव मन की तृष्णा द्रोपदी के चीर की भांति बढ़ती ही चली जाती है। तृष्णा की यह खाई कभी भी भरी नहीं जा सकती। इसे जीतने का एक

ही मात्र उपाय है संतोष। जिसके मन में ,जीवन में संतोष वृत्ति आ गई, वही जीवन को सुखमय जी सकता है।

धर्म अमृत का पान करने से होते हैं दुःख दूर

भारत ऋषि मुनियों की पवित्र धरती है, इसी धरती के कण-कण में महापुरुषों के उपदेश व्याप्त हैं। हमारे सद्गुरुओं ने हमें धर्म का अमृत प्रदान किया । अगर मनसा वाचा कायसा धर्म का अमृत पान कर लिया जाए तो सदा के लिए दुःख दूर हो जाएंगे। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि उन अनमोल जीवन को अगर प्रमाद में खो दिया तो पुनः जीवन को प्राप्त करना अति कठिन होगा। जीवन की विशुद्धता के लिए दया, दान, पुण्य का कार्य करना आवश्यक है। जीवन में समभाव की परम आवश्यकता पर बल देते हुए मुनि जी ने कहा कि समत्व की साधना ही साधक मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि बर्तन में तपाकर जैसे घी को विशुद्ध किया जाता है वैसे ही शरीर को तप जप में तपाकर आत्मा को विशुद्ध किया जा सकता है। घर में व्यापार में या धर्म क्षेत्र में समता रककर चलने वाला व्यक्ति सदा जय विजय को प्राप्त करता है। सभा में सुरिन्द्र मुनि जी ने प्रमाद का त्याग कर पर्युषण पर्व के दिनों अधिक से अधिक धर्म प्रवृति करने की प्रेरणा प्रदान की।

क्षणिक सुख ही दुःख का कारण बनते हैं

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हर प्राणी सुख की अभिलाषा तो रखता है, मगर कार्य दुःख के करता रहता है। मनुष्य विषयों को क्षणिक सुखों को वास्तविक सुख मान लेता है। वास्तव में वे सुख अन्ततः दुःखों का कारण बन जाते हैं । उन्होंने मसाल देते हुए कहा कि कुत्ता हड्डी को मुँह में लाकर चबाता है उससे उसके अपने मुँह में ही खून निकल आता है और वह अपने ही खून का स्वाद से हर्ष अनुभव करता रहता है । उसी प्रकार मानव भी अपना नुकसान उठाकर सुख का अनुभव करता है ।

संतोष की जिन्दगी में ही शांति मिलती है । अपनी कामना, वासना को दूर करने वाला ही सच्चा सुखी है। सभा में मदुर वक्ता रुपिन्द्र मुनि जी ने मन को वश रखने में विविध उपाय बताए। अंत में आगमज्ञाता उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज द्वारा सभी को तत्वज्ञान प्रदान कर, मंगलपाठ सुनाया।

आत्मशुद्धि का पर्व है पर्युषण, आराधना करें

पर्युषण आत्म शुद्धि का पर्व है। हमें शरीर वादी से आत्मवादी बनने की प्रेरणा प्रदान करता है। पर्व व उत्सव की परंपरा विश्व के सभी देशों मे है। धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्वों का अयोजन सर्वत्र दिखाई देता है। पर्युषण आडम्बर का नहीं अपितु आत्मज्योति का पर्व है । आत्मा से बंधे हुए मोह, माया,

राग-द्वेष एवं मन के विकार रूपी शत्रुओं पर विजय पाने का पर्व है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि त्याग व तप को बढ़ाने की भावना का पर्व है। देव, गुरु धर्म के समीप रहते हुए, पाप वृत्तियों का त्याग करना, सम्पूर्ण निष्ठा के साथ अपनी उर्जा के विकारों को मुक्त कराने में लगानी है। आत्मा का आत्मा में ध्यान करना, आत्मा में स्थित होना ही यह पर्व हमें संदेश देता है। ज्ञान की चर्चा करते हुए महाराज श्री जी ने कहा कि ज्ञान के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। जीवन का सही साधन सामग्रियां एक तरफ रख दी जाएं और एक तरफ मात्र ज्ञान रहे, फिर भी ज्ञान की तुलना नहीं की जा सकती। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं ज्ञानमय आत्मा ही मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी हो सकता है। सभा में इस से पूर्व सुरिन्द्र मुनि जी ने आत्मज्ञान की प्रेरणा देते हुए अन्तगढ़ का सुन्दर विवेचन भाष्य प्रदान किया । ध्यान प्रेमी रुपिन्द्रमुनि जी ने जन्म से नहीं कर्म से सच्चे महावीर के अनुयायी बनने की प्रेरणा देते हुए कहा कि महावीर का सच्चा अधिकारी तो उनके दिए हुए सिद्धांतो को अपनान पर ही बन सकते हैं। अंत में आगमज्ञाता उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज द्वारा सभी को ज्ञानदान की प्रेरणा दी गई और सभी बालकों को सम्मानित किया गया।

पर्युषण का अर्थ है मन को धर्म से भर देना

भारतीय संस्कृति में पर्व का गहरा महत्व रहा है। कुछ धर्म लौकिक होते है, जिसमें घूमने-फिरने, अमोद-प्रमोद होता है। मगर कुछ लोकोत्तर होते हैं जो हमें धर्म व अध्यात्म की प्रेरणाएं देते हैं। पर्युषण पर्व जैनों का पर्व है। जिसमे 8 दिन तप-जप, व्रत, आलोचना आदि की तपश्चर्या की जाती है। यह पर्व वर्ष में एक बार आता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि पर्युषण शब्द का अर्थ ही चारों तरफ से मन को धर्म से भर एकांत साधना में रह कर चिंतन करना, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, यहाँ से आगे कहाँ जाऊँगा। मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, कोई भी मेरा दुशमन नहीं, पर्युषण पर्व आने पर जैन समाज में बड़ा उत्साह रहता है। सुरिन्दर मुनि जी ने बतलाया कि इस आगम में 90 जीवात्माओं का वर्णन है। जो वीतराग वाणी श्रवण कर संयमी बन मोक्ष प्राप्त करते हैं। सभा में भारी संख्या में व्रत ग्रहण किया। अंत में आगमज्ञाता उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज द्वारा सभी को आत्मज्ञान को ही सच्चा पवित्र ज्ञान मानने की प्रेरणा दी गई। महामन्त्री ने सूचना देकर सभी का आभार व्यक्त किया।

कामनाओं का आदि-अंत नहीं होता

जालन्धर जैन स्थानक गुड़मंड़ी में यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि

अपरिग्रह साधना का सौंदर्य है। यह मानव जीवन के उत्थान का मूलमंत्र है । लोभ वृत्ति पर विजय पाने से ही मन को शांती मिलती है। कामनाओं का आदि-अंत नहीं होता। यही कारण है कि मन की इच्छाएं कभी समाप्त नहीं होती। लोभ का सबंध मन की इच्छाओं से है और मन की इच्छाएं कभी पूरी नहीं होती। महवीर जी ने कहा है कि मानव को जैसे-जैसे लाभ होता है लोभ बढ़ता जाता है । संसार के सभी वैभव भी मिल जाएं तो भी मन की तृष्णा का अंत नहीं होता। महाराज श्री जी ने अपरिग्रह को व्रत कहा गया है । संसार के सभी प्राणी सुख के अभिलाषा हैं, लेकिन कोई भी सुखी नहीं दिखाई देता। मानव जिस ओर भी देखता है, उसे दुःख ही नजर आते हैं महावीर ने कामनाओं पर विजय पाने का संदेश दिया है। देह में रहकर भी देहतीत अवस्था में जीने वाला व्यक्ति सच्चा साधक कहलाता है ।

विपत्ति के समय धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

मानव को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सत्य एवं धैर्य बनाए रखना चाहिए । धैर्य हम उस कवच को कहते है जो जीवन को खतरे के समय में भी सुरक्षा प्रदान करता है। धैर्य एक ऐसा मानवीय गुण है जो समस्त गुणों को बनाए रखता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि धैर्यहीन मानव छोटे-छोटे कष्टों से भी विचलित हो जाता है।

धैर्यवान आत्मा जो कार्य हाथ में लेती है, उसे मंजिल तक पहुँचा देती है, वह आए हुए विघ्न-बाधा में कभी भी भयभीत नहीं होता सदा साहसीन बन अपने लक्ष्य को पाता है। उन्होंने कहा कि चाहे संसार के कार्य हो चाहे साधना के कार्य दोनों ओर धैर्य गुण की नितांत आवश्यकता होती है। धैर्यवान हारी हुई बाजी भी जीत जाता है, इसके विपरीत धैर्यहीन जीती हुई बाजी भी हार जाता है।

प्राणों के बिना जीवन की कल्पना संभव नही

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि जीवन में चाहे सब कुछ चला जाए किन्तु धर्म की सदा रक्षा करनी चाहिए। धर्म की खातिर राजा हरिश्चन्द्र. भगवान राम आदि ने कष्ट सहन किये। धर्म हमारी रक्षा करता है। प्राणों के अभाव में जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ्य हो, इन्द्रियां पूर्ण वेग में हो मगर प्राणों का अंत होने पर सभी का स्वतः अंत हो जाता है। महाराज श्री जी ने उदाहरण देते हुए कहा राजा ने स्वप्न में अपने राजमहल में शक्ति सरस्वती स्वस्थ्य लक्ष्मी आदि देवियों को निकलते हुए देखा तो दंग रह गये। किन्तु राजा ने धर्म को जाते देखा तो रोक लिया,परिणाम स्वरूप सभी देवियां वापिस लौट आई, पूछने पर पता चला कि सभी देवियों के स्वामी धर्म देवता राजा के महल में विराजमान हैं।

इंसान का मृत्यु को ही पाना जीवन नहीं है

उसी का जीवन सफल व सार्थक है जो जीवन में जप-तप पूजा पाठ का आचरण करता रहता है। मात्र खाना पीना व संसार के साधनों को एकत्रित कर के मृत्यु को प्राप्त करना ही जीवन नहीं है । यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने सुरिन्द्र मुनि के जन्मोत्सव पर कहा कि जिनके माता-पिता धर्मवान होते हैं, उन्ही बच्चों में धर्म के सुसंस्कार पल्लवित होते हैं। उन्होंने कहा कि हम बालकों के भविष्य की चिंताएं तो करते हैं मगर उनके जीवन में सद्संस्कार नहीं डालते। उसी का प्रणाम है कि युवावस्था आने पर बालक माता-पिता को छोड़कर अलग रहने लग जाते हैं।

आज आवश्यकता है कि बालकों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया जाए। सभा में सुरिन्द्र मुनि जी द्वारा लिखित ग्रन्थ 'मन के आंगन दीप जले' का विमोचन गिद्दड़बाहा निवासी सुभाष जैन द्वारा किया गया। जन्मोत्सव पर बधाई देने हेतु बठिंड़ा, लुधियाना, जालन्धर, मालेरकोटला, सरदूलगढ़, दिल्ली आदि से बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे। सभा के प्रधान व महामन्त्री द्वारा सत्कार किया गया। सुरिन्द्र मुनि द्वारा वाचन और अंत में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज द्वारा तत्वज्ञान व मंगलपाठ किया गया।

वर्तमान में जीवन जीने वाला सदा सुखी रहता

भूत व भविष्य की विचारधारा में जीवन व्यतीत करने वाला मानव सदा अशांत एवं वर्तमान में जीने वाला सदा शांत रहता है। पशुजगत वर्तमान में जीता है वह मानव से ज्यादा प्रसन्न नजर आता है। मानव श्वास तो वर्तमान के लेता है पर विचार आगे पीछे के ग्रहण करता है। समय बहुत कीमती वस्तु है, इसको खोने वाला व्यक्ति अपने को खोता चला जाता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि जैसे कीमती हीरे की कीमत जौहरी ही जान पाता है, वैसे ही समय की कीमत बुद्धिमान ही परख सकता है। कुछ लोग ताश के पत्तों मे समय काटना चाहते हैं, लेकिन उन्हें यह ज्ञात नहीं रहता कि समय उनको काटता चला जा रहा है। खोया हुआ धन एवं जीवन पुनः प्राप्त नहीं हो सकता है, लेकिन खोया हुआ समय लाख चाहने पर भी नहीं मिल सकता। भविष्य में मात्र कल्पना है इस में सच्चाई नहीं रह पाती । अतः भूत भविष्य को छोड़कर वर्तमान में जीना चाहिए । मगर माता-पिता बालक को भविष्य में डाक्टर या वकील बनाने पर लड़ते रह सकते है, जब कि बालक का अभी जन्म ही नहीं हुआ। अतः जो है उसको सार्थक कीजिए। सभा में रुपिन्द्र मुनि जी ने ध्यान साधना पर एवं उपाध्याय जी ने तत्वज्ञान पर विवेचन किया।

वर्तमान से दूर भागना चाहता है मानव मन

इंसान सदा भूत और भविष्य में भटका रहता है परन्तु इसमें कोई परिणाम एवं फल नहीं निकल पाता। वस्तुतः काल तो एक ही है और वह है वर्तमान काल जो हमारे साथ रहता है, इसी को सफल सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए लेकिन मानव मन सदा वर्तमान से दूर भागना चाहता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि हकीकत में जी चुराकर भविष्य के घोड़े दौड़ाता रहता है वह मात्र कल्पनाएं बन कर ही रह जाती हैं। जिसे भूख तो अभी सता रही है, उसे भविष्य में बनने वाले भोजन मिष्ठान का आश्वासन देने से भूख शांत नहीं होगी। धर्म हमेशा वर्तमान जीवन को सुधारने के लिए पावन प्रेरणा प्रदान करता है . जो कुछ हम ने करना है उसे कल पर न छोड़कर आज ही करने का लक्ष्य रखना चाहिए। विद्वान व्यक्ति कल के कार्य को आज ही करने की सोचता है, उसके विपरीत नसमझ आज का कार्य कल पर छोड़ देता है। जो कल कभी जीवन में आ ही नहीं पाता। भगवान महावीर के समय की महत्ता बतलाते हुए साधक को यही संदेश दिया कि जो भी श्रेष्ठ कार्य करने की भावना जागृत हो उसे तुरंत कर लेना चाहिए ।

बाहर के नहीं भीतर के शत्रु को नष्ट करें

समस्त धर्म दर्शन आत्म विकास पर जोर देते हैं। फिर भी मानव रात-दिन शरीर विकास के लिए प्रयत्नशील बना हुआ है। नश्वर शरीर को अनश्वर बनाने में आतुर रहता है। जैसे पक्षी घौंसले में निवास करता है,वैसे ही शरीर घौंसले में आत्मा रूपी पंछी का निवास जरूर है। मगर पंछी के उड़ जाने के बाद घौंसला कोई महत्व का नहीं रहता। बाहर के नहीं भीतर के शत्रु को नष्ट करें। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आत्मा पर जब तक कर्मों का रंग चढ़ा रहता है, तभी तक संसार दशा रहती है। आत्मा की ज्ञान दशा जागृत होने पर यह कर्म बंधन को तोड़ देती है। अपनी विशुद्ध अवस्था मोक्ष को प्राप्त कर लेती है। हमें न पुण्य से न पाप से बंधना है दोनों बंधन है। इनसे मुक्त होना है। बाहरी शत्रुओं को नष्ट करना असान है परन्तु विकारों पर विजय पाना कठिन है। ज्ञानवान आत्मा ही विजय प्राप्त कर पाता है। आत्मा से ही आत्मा जीता जा सकता है, जब तक यथार्थ बोध नहीं होता, तब तक अज्ञान हमारे पर हावी रहता है। जीवन में प्रमाद को नष्ट कर पुरुषार्थ को जागृत करना है। क्रोध माया मान लोभ रूपी कषाय निरंतर नष्ट करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए ।

जीवन का मूल अधार है अध्यात्म

अध्याथ्म जीवन का मूल अधार है । जिस प्रकार समुद्र में रत्नों का भंडार माना जाता है, अपने भीतर वह असंख्य रत्न एवं

मोती छिपाए रखता है। मानव उसे प्राप्त करने की इच्छा रखता है। किन्तु अगर वह उपर ही उपर तैरता रहे तो कभी प्राप्त नहीं हो सकते , उन रत्नों को वही पा सकता है जो सागर में गहरी डुबकी लगा कर गहराई तक पहुँचता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि प्राणों का मोह त्याग कर जो डुबकी लगा सकता है वही अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। इसी प्रकार आत्मा में अनंत गुण रूपी रत्न हैं। प्रत्येक साधक उसे प्राप्त करना चाहता है। किन्तु उसे ही प्राप्त होंगे जो एकनिष्ठ होकर साधना करता है, भीतर आत्मा के तल तक पहुँचता है।, यूँ तो संसार में अनेक साधक हैं, किन्तु सम्पूर्ण चेतना और इच्छा शक्ति को एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित करके साधना पथ पर बढ़ने वाले साधक विरले ही होते हैं। साधना तन्मयता व गहरी एकाग्रता चाहती है। साधना व लक्ष्य की एकाग्रता ही सफलता की उपलब्धता कराती है। सम्पूर्ण दुरबलताओं का अज्ञान नष्ट हो जाता है। मुनि जी ने कहा कि आज मनुष्य के भीतर क्षेत्र मे उन्नति प्रगति की है। प्राकृतिक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने में जो अपूर्व असफलता रही है, आत्मिक शक्ति का प्रमाण है जल एवं स्थल पर तो उसे अपना राज्य स्थापिथ कर ही लिया, अब वह आकाश में उड़ता हुआ चन्द्रमा पर भी अपना राज्य स्थापित करना चाहता है, परमाणु का पता लगाकर उसनें लक्ष्य भंडार पर अधिपत्य किया है। इतना सब कुछ होकर भी यह भौतिक शक्ति आधयात्म शक्ति के आगे शून्य है।

समता आत्मा के स्वभाव की होनी चाहिए

जिस मानव का मन का समत्वभाव में स्थित रहता है, वह शीघ्र ही अपनी आत्मा का उत्थान कर पाता है। वह परमात्मा भाव को प्राप्त कर लेता है। यह समता भीतर से होनी चाहिए, आत्मा के स्वभाव से होनी चाहिए। जिस प्रकार वाहन उबड-खाबड़, ऊँचे- नीचे स्थान पर दौड़ नहीं पाता उसी प्रकार मायावी जीव भी सद्गति को प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे भोजन निर्माण में हर सामग्री का संतुलन रखना आवश्यक है वैसे ही जीवन य़ात्रा सम्पन्न करने में संतुलन की आवश्यकता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें न तो हर्ष में फूलना चाहिए न शोक में खिन्न होना चाहिए। समताधारी मानव सभी स्थितियों में समभाव रखता है। समता आत्मा का स्वभाव है, ममता विभाव है। समत्व की साधना से भवभ्रमण संसार समाप्त हो जाता है ते विषमता से संसार बढ़ता है। बात बात में क्रोधित होना, आग बबूला हो उठना, यह आत्मा की विकृति है। क्रोध, मान, माया, लोभ हमारे जीवन का शत्रु हैं। बाहर के शत्रु इतना कष्ट नहीं पहुँचाते जितना भीतर के कष्ट देते हैं। समत्व से मुक्ति की प्राप्ति होती है, इसके विपरीत ममत्व से दुर्गतियों मे भ्रमण करता रहता है। हमारे जीवन में जीतनी मात्रा में समता की प्राप्ति होगी, उतना ही जीवन सुख, शांति को प्राप्त करेगा। सभा में श्री सुरिन्द्र मुनि जी एव

उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने अनमोल मानव जीवन पर प्रकाश डाला।

समता भाव से दूर होता जा रहा है मानव

आज का मानव दिन-दिन समता भाव से दूर होता जा रहा है , परिमाणतः तनाव व टैंशन में जीता है। अगर आप सच्चे हृदय से समत्व भाव को धारण कर लें तो आप की आत्मा निरंतर उज्जवल होती चली जाएगी। लेकिन मानव मन सही रास्ते चलते-चलते भटक जाता है। यह विंचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मन कुमार्ग पर अग्रसर हो उठता है। संत जन पुनः उन्हें सुमार्ग पर लौटने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। कुपथगामिनी यात्रा को छोड़कर हमें सुपथगामिनी यात्रा पर चलना है। मात्र माला, पूजा पाठ की सामग्री धारण करने से ही धर्म की प्राप्ति नहीं होती, इस हेतु मन के विचारों को शुभ बनाना आवश्यक है।

शब्दों के उच्चारण से मन का उच्चारण भी आवश्यक है। धर्म प्राप्ति के लिए मन से वैर-विरोध, राग-द्वेष के बावों को त्यागना अति आवश्यक है, समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री भाव लाना होगा, मनुष्य अशुभ विचारों से विवेक शून्य बन जाता है। मानसिक शांति खो बैठता है। हमें आत्मा का शुद्ध स्वरूप चिंतन करते रहना चाहिए। आत्मा शुद्ध-बुद्ध व निरंजन व निराकार है। पवित्र विचारों को मन में स्थान दें। पवित्र विचारों से मानसिक, शारीरिक व आत्मिक रोगों का नाश होगा। स्वपर कल्याण होगा।

सभा में उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने जीव के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि जीव ही जीव को नहीं पहचान पा रहा। हम अपने ही घर को भूल बैठे हैं।

निज स्वरूप जाने बिना पर स्वरूप में भटकते रहेंगे। वही धन्यशील आत्मा है जो निज स्वरूप को भली-भांति जानकर अपना आचार-विचार निर्मल बनाकर जीवन जीता है। मंगल पाठ एवं त्याग तप करवाया गया।

फूलों की तरह जीवन को भी सुगंधित बनाएं

जीवन में पुण्य पाप का सदा महत्व बना रहता है। पूर्व जन्मों के संचित पुण्य कर्म के प्रभाव से हमें यह मानव देह मिली है। इस अनमोल जीवन रूपी हीरे को हम विषयो, कषायों में समाप्त करते जा रहें हैं। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमारे मन की आदत दुःख में प्रभु को सिमरण करने की है, मगर सुख में हम प्रभु भक्ति करते रहें, तो आने वाले दुःख हलके होते चले जाएंगें। संसार में . तो मनुष्यों की संख्या करोड़ों-अरबों में आंकी गई है। वस्तुतः मानवता वाले मानव एक-दो ही नजर आते हैं। उन्होंने कहा यदि दीपक में तेल नहीं तो दीया मिट्टी है, फूल में यदि सुगंध-सौरभ नहीं तो फूल भी धूल सदृश्य होगा। इसी तरह मानव में यदि मानवता नहीं तो वह भी सच्चा मानव नहीं। मात्र शरीर से मानव बन जाना ही पर्याप्त नहीं प्रकृति में भी मानव बनना होगा। इस मानव शरीर में अन्नतं शक्तिया निहित हैं, जो देवी-देवताओं को

भी दुर्लभ होती हैं। मनुष्य को हमेशा पाप-पुण्य का ख्याल रखना चाहिए। पुण्य के प्रताप से हमें अनुकूलता प्राप्त होती है। प्रत्येक मनुष्य सुख का अभिलाषी रहता है। दुःख सभी को अप्रिय होता है। उन्होंने कहा हम जैसा बोएंगे वैसा ही पाएंगे। यदि दूसरों को सुख-शांति देंगे, तो हमें भी सुख-शांति मिलेगी, माता जिस प्रकार बच्चों के लिए मिठाई बनाती है, खिलाती है, तो स्वयं को भी मीठा मिलता है।

सभी के प्रति बराबर भाव रखना ही है धर्म

सृष्टि का प्रत्येक प्राणी आधि, व्याधि उपाधि इन तीनों पापों से पीड़ित है। इनसे मुक्त होने की अकांक्षा वह रखता है किन्तु मुक्ति की तीव्र इच्छा होते हुए भी वह मुक्त नहीं हो पाता, क्योंकि उसका मार्ग गलत है। संयम, ज्ञान, दर्शन, चरित्र पर चलने से ही साधक सही लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है. मानव संसार से मुक्त हो सकता है। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि किसी भी परिस्थिति में मानव को श्रद्धावान रहना चाहिए। सभी के प्रति समान भावना रखना चाहिए। दैहिक, दैविक, भौतिक इन तीनों तापों से त्रस्त जीवात्मा जन्म मरण के चक्र में फंसा रहता है। वीतराग धर्मवाणी पर श्रद्धा होनी चाहिए। सभी की आत्मा को अपनी आत्मा समझें। जब तक मानव वास्तविक स्वरूप को नहीं समझता तब तक जीवन में सुख की कल्पना मात्र आकाश कुसुम तुल्य ही रहती है। हम कौन है एवं क्या हैं, इस सवाल का

जवाब मानव बहुत प्राचीन काल से खोज रहा है । हमारी जन्म मरण की एक लम्बी परंपरा है। हम एक जीवात्मा हैं, जो अनादि कालीन कर्मों से लिप्त है। आत्मा पर शरीर का सदा आवरण रहता है। इसलिए हमारा वर्तमान जीवन में ध्येय होना चाहिए कि हम सत्संग, स्वाध्याय, ध्यान, जप, तप की साधना द्वारा अपने कर्मों को समाप्त करें।

रावण बनकर रावण को न जलाए, राम बनें

अदिकतर लोगों के शरीर में अभिमानी रूपी रावण का निवास बना रहता है। कौन ईर्ष्या,तृष्णा, लालच, द्वेष की आग में नहीं जल रहा है, फिर सच्चा राम कौन बनेगा और सच्चे रावण का दहन कौन कर पाएगा। यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि रावण महान ज्ञानी व विद्वान थे मगर अहंकार के कारण अधर्म के कारण उनका पतन हुआ। लेकिन आज प्रतीक रूप में से जलाने वालों को अपने भीतर देखने की आवश्यकता है। अगर हमारे में रामत्व नहीं तो जलाने का क्या अधिकार है । विजय दशमी के दिन अपने भीतर पड़े राग-द्वेष रूपी शत्रु को नष्ट करना है। तभी दशहरा मनाना सार्थक होगा।

आज अच्छाईयां दम तोड़ चुकी हैं। सभ्यता एक जंग लड़ रही है। भारी तदाद होने के बावजूद शरीफों की कौम बईमानों के आगे घुटने टेक रही है। पहले तो केवल एक रावण था, पर आज

तो घर-घर में रावण तैयार हो रहें हैं। अतः रावण के पुतले को न जलाकर अपनी बुराईयों को नष्ट करें।

अहिंसा विश्वशांती का मूलाधार

विश्व में समस्त धर्मों का आधार अहिंसा धर्म है । अहिंसा के अभाव में धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आज दिन-प्रतिदिन हिंसा का फैलाव होने से घर परिवार समाज टूटते चले जा रहे हैं। विश्व बंधुत्व व भाईचारे को एक दूसरे के सहयोगी बनने की भावना नष्ट हो रही है। यह विंचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि बढ़ती हुई हिंसा एक दिन स्वयं को ही समाप्त कर देती है। गांव में लगी आग से अपने को नहीं बचाया जा सकता। जो हिंसा औरों के लिए निर्मित होती है वह स्वयं को समाप्त कर देती है। अहिंसा धर्म वीरों की पहचान है, कायरों की नहीं, धरती से समस्त प्राणियों के प्रति अपनत्व बाव बनाएं रख कर हिंसां का त्याग कर देना ही अहिंसा है। मन वचन काया से किसी के प्रति हिंसक भाव न लाना ही अहिंसा है। समस्त बुराईयों का त्याग ही अहिंसा है। जो व्यवहार हमारे अनुकूल न हो, वैसा हम दूसरों के साथ भी न करें। किसी की हिंसा करना महापाप है।

मन के भीतर के विकारों को मिटाना कठिन

यह विचार प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि समस्त धर्म आत्मा के विकास पर जोर देते हैं। फिर भी मानव रात-दिन अपने शरीर के विकास के

लिए प्रयत्न करता रहता है। मानव नश्वर शरीर को अनश्वर बनाने में आतुर रहता है। जैसे पक्षी घौंसले में निवास करता है,वैसे ही शरीर घौंसले में आत्मा रूपी पंछी का निवास जरूर है। मगर पंछी के उड़ जाने के बाद घौंसला कोई महत्व का नहीं रहता। घोंसला समाप्त होने पर आत्मा रूपी पंछी नए शरीर के लिए घोंसले में निवास करने निकल पड़ता है। सरांश यही है कि महत्व आत्मा का है। जीव की ज्ञानदशा जागृत होने पर आत्मा कर्म बंधन को तोड़कर मोक्ष प्राप्त कर लेती है। हमें न पुण्य से न पाप से बंधना है। दोनों बंधन है। इनसे मुक्त होना है। बाहरी शत्रुओं को नष्ट करना असान है परन्तु विकारों पर विजय पाना कठिन है। ज्ञानवान आत्मा ही विजय प्राप्त कर पाता है। उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने सामायिक का महत्व बताया व मंगल पाठ किया।

शुभ भावना उत्थान का कारण है

प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जो व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से चाहते हैं, वही व्यवहार हमें दूसरों के साथ प्रयास करना चाहिए। जीवन में भावना का बड़ा महत्व है। शुभ भावना मानव के उत्थान एव अशुभ भावना पतन का कारण बनती है। मन के विचारों का अस तन पर व क्रियाओं पर भी होता है। सभी धर्मों में मन को पवित्र करने का संदेश दिया है। महावीर के समोवशरण में ज्ञान के साथ दया करुणा के दृष्य नजर आते थे। शेर के साथ

बकरी, चूहे के साथ बिल्ली, नेवले के साथ सांप सभी उपस्थित रहते थे।

मानव सब से बुद्धिमान प्राणी है, अतः उस अधिक दयावान होना चाहिए। आज मानव दयाविहीन होकर पशु से भी गिरता जा रहा है। दया मानव का सहज स्वाभाव है, हिंसक तो वह बाद में अपने स्वार्थ के कारण बनता है। सभा में मुनि जी की प्रेरणा से दान में दी जाने वाली स्वर्ण अंगूठियां की संख्या बढ़कर 32 हो गई।

सभा में युवा मनीषी सुरेन्द्र मुनि, रुपेन्द्र मुनि ने भी अपने विचार प्रकट किये। इसके अन्तर्गत शास्त्र स्वाध्याय हुआ। अंत मे उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी महाराज द्वारा मंगलपाठ एवं प्रधान सतीश जैन मन्त्री सुरेन्द्र जैन ने दान दाताओं का आभार व्यक्त किया।

जीवन के साथ होता है कर्मों का अटूट संबंध

मानव जैसे कर्म करता है वैसे ही फल भोगता है। जड़ चेतनमय इस जगत का यह शाश्वत नियम है, कर्मों का कर्त्ता न अकेला चेतन है और न ही अकेला जड़ है । शराब का नशा न अकेली बोतल में है न अकेले मनुष्य में, दोनों के समिश्रण से नशा आता है। प्रवचन सभा में डॉ राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार जड़-चेतन दोनों के मिलन से कर्म का बंधन होता है। क्योंकि कर्म मूलतः अचेतन है,महाराज श्री जी ने सांसारिकता का मूल बीज कर्म को बतलाते

हुए श्रोताओं को हमेशा जागृत रहने का उपदेश दिया। प्रतिक्षण आत्म चिंतन मनन होता रहता है, वह कार्मण वर्गणाओं को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है एवं कार्मण वर्गणाएं शुभ अशुभ रूप में परणित होती हैं। जीवन के साथ कर्मों का अटूट संबंध है। पूर्वकाल कृतकर्म भी जीव के साथ बने रहते हैं, अज्ञानी पाप करते समय तो यह नहीं समझ पाता कि वह पाप कर रहा है। किन्तु जब जीव पाप कर्म का दुःख रूपी फल भोगता है, तब उसे अग्नि में जलने जैसी पीड़ा अनुभव होती है।

अधर्म रूपी जहर का करें त्याग

जब तक हम किसी वस्तु के मुल्य को समझ नहीं पाते तब तक उसका सदोपयोग भी नहीं कर पाते। एक बालक हीरे को न समझ पाने के कारण उसका अंची के रूप में खेलने के लिए प्रयोग करता रहता है । किन्तु समझ आने के बाद उसे सदा संभाल कर रखता है। जिसे अमृत व जहर का परिज्ञान होगा, वही तो जहर को छोड़ अमृत ग्रहण करेगा। यह विचार धर्म सभा में संबोधित करते हुए डॉ. राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि हमें भी अधर्म रूपी जहर का त्याग करके धर्म रूपी अमृत को ग्रहण करना है। एक बहुमुल्य हीरा कृषक को खेत में मिला, उसने उसको अपने गधे के गले में डाल दिया, सधारण व्यापारी ने उसे खरीद कर अपनी दुकान के बाहर शोकेस में लगा दिया, लेकिन जौहरी की दृष्टि पड़ते ही वह हीरा लाखों में बिक गया। प्रवचन सभा में इस से पूर्व रुपिन्द्र मुनि ने संक्रान्ति का

जाप करवाया एवं उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने धर्म स्वरूप समझाते हुए सक्रान्ति का सुमरिण किया। 18 जुलाई रविवार को प्रातः 8 बजे आचार्य श्री आनन्दऋषि जी का जन्म जयन्ति अयोजन होगा। जिसमें अन्य प्रांतों के श्रद्धालु लोग अपनी श्रद्धार्चना समर्पित करने पहुँचें गे। प्रदान सतीश जैन ने बताया एकासन व्रत की अराधना की जाएगी।

धर्म ही आत्मा का निजगुण

मानव अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्म की ओट में वैर, विरोध, दंगे और फसाद करवाता है, हम ने धर्म का सही स्वरूप ही नहीं समझा। इसलिए धर्म के नाम पर अधर्म पनप रहा है। धर्म तो आत्मा का निजगुण है।धर्म तो शांति का धाम है, सुख का मूलाधार है। यह विचार धर्म सभा में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए डॉ. राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने व्यक्त किये। उन्हों ने कहा कि धर्म हमारे जीवन का सच्चा मित्र है, जो सुख-दुःख में लाभ-हानि ने जीवन मरण के साथ सदा साथ निभाता है। वो मित्र, परिजन, धन-संपदा किस काम की जो समय आने पर बिछुड़ जावे। सभा मे इससे पूर्व रुपिन्द्र मुनि जी ने मन को संयम ही सुखी बनाता है। आज के विश्वजीवन में मानव का मन जितना दुःखी है, उतना तन से या पदार्थों से नहीं। मन सदा अशांत बना रहता है, इसे वश में करने के लिए संयम की दवा आवश्य़कता है। गीता में श्री कृष्ण जी ने इसको वश में रखने के लिए दो उपाय बतलाए हैँ अभ्यास व वैराग्य।

राग व द्वेष से पाप की वृद्धि होती है

जैन स्थानक फरीदकोट के नव विर्मित हाल में रविवार को धर्म सभा में संबोधित करते हुए डॉ. राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कि मानव के दो बड़े शत्रु है राग जो मीठा लगता है और द्वेष जो कड़वा दिखाई देता है, दोनों से संसार में पाप वृद्धि होती है। यह सर्प डंक की तरह जीवन में जहर का संचार करते हैं।

इससे पूर्व सभा में सुरिन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा कि वही मानव सुखी हो सकता है जो धर्म की शरण में जाता है, अधर्म दुःख का कारण है। इस अवसर पर उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी महाराज ने कहा कि तत्व का ही जानकार ही जीवन जीने की कला का ज्ञाता होता है। आत्मा तत्व से ही सब से महत्वपूर्ण तत्व है। अतः आत्मा को जानें, समझें। जैन सभा के प्रधान सतीश जैन ने कहा कि विश्वशांती के लिए शहर में प्रतिदिन महामंत्र नवकार का जाप व्रत साधना प्रांरभ हो चुकी है।

मौतके बाद कुछ भी साथ नहीं जाएगा

जैन स्थानक फरीदकोट के नव विर्मित हाल में रविवार को धर्म सभा में संबोधित करते हुए डॉ. राजेन्द्र मुनि जी महाराज ने कहा है कि हमारा जीवन सादा एवं विचार ऊँचे होने चाहिए, विचारों में पवित्रता होनी अत्यंत जरूरी है। खानपान का जीवन विचारों पर गहरा असर होता है। विचार शक्ति मानव की सबसे बड़ी शक्ति है, इसी से संसार परिवर्तन संभव है।

आज की बढ़ती वैज्ञानिक शक्ति में मानव मन की यह धारणा बलवती होती जा रही है कि हमारे पास साधनों की विपुलता हो तो सब कुछ संभव होगा मगर मात्र साधनों के संग्रह से ही शांति संभव नहीं । उसके लिए मन की संतुष्टी अत्यंत आवश्यक है। विलासिता का बढ़ता जोर मानव को पथभ्रष्ट कर देता है। मुनि जी ने जीवन नश्वरता का वर्णन करते हुए कहा कि जिस तन, धन, परिवार को हम अपना समझ रहें है, मृत्यु के बाद इनमें से कोई भी साथ नहीं जाएगी। इसके बावजूद मोह के बंधन में बंधा हुआ प्राणी सदैव ही अपने को पराया व पराये को अपना मानकर चलता रहता है। यही उसके दुःखों का कारण है।

डॉ राजेन्द्र मुनि शास्त्री के जन्म दिन पर विशेष

प्रस्तुति सुरेन्द्र मुनि

भारतीय संत परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्य सम्राट् श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के प्रधान शिष्य रत्न उपप्रवर्तक डॉ राजेन्द्र मुनि जी शास्त्री जी का 44 जन्म दिवस श्री तारक जैन गुरु ग्रन्थालय में प्रातः वेला में समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। समारोह को आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का सानिन्ध्य उपलब्ध होगा।

आपका जन्म मेड़ता सिटी के समीप बडू ग्राम में सन 1954, 1 जनवरी को हुआ था। पिता श्री पूनम चन्द जी डोसी (ओसवाल) तथा माता श्रीमति धापकुंवर बाई।

माता-पिता के सद्संस्कारों से बचपन में पड़े धर्मबीज पल्लवित/पुष्पित होते रहे, जो परम श्रद्धेय उपाध्याय दादा गुरुदेव श्री पुष्कर मुनि जी महाराज एवं सद्गुरु श्रद्धेय श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज के सत् सानिन्ध्य को पाकर विराट रूप धारण करने लगे। परिणाम स्वरूप अपने अग्रज भ्राता पं रत्न श्री रमेश मुनि जी शास्त्री के साथ सन् 1965 में 11 वर्ष की अल्पायु में जैन भगवती दीक्षा अंगीकार की।

आपने अपना सम्पूर्ण जीवन ज्ञान व क्रिया हेतु समर्पित कर दिया। लगातार 25 वर्ष तक संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, आंग्ल आदि भाषाओं का अध्ययन तथा आगम न्याय, व्याकरण, काव्य व पौराणिक साहित्य का गहन अध्ययन किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ राजेन्द्र मुनि जी ने अध्ययन रूचि के परिणाम-स्वरूप साहित्य-रत्न, शास्त्री, एम.ए, पी.एच. डी, काव्यतीर्थ, जैन सिद्धान्ताचार्य, महोपध्याय आदि उच्चतम परीक्षाएं उत्तीर्ण की। अध्ययन के साथ वक्तृत्वकला का बी आपके जीवन में अद्भुत साम्य है । जब आपका प्रवचन होता है, तो हजारों लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि आपकी वाणी के द्वारा मां सरस्वती अवतरित हो रही है। प्रखर,प्रज्ञा, तीव्र स्मृति एवं धारणा के धनी डॉ राजेन्द्र मुनि जी जितने अध्ययनशील है, उतने ही विनम्र सेवाभावी तथा मिलनसार हैं।

सामाजिक कृत्तित्व के क्षेत्र में स्कूल, हस्पताल, गौशाला व साधना केन्द्र आदि प्रमुख हैं। लेखन के क्षेत्र में उपन्यास, निबन्ध,

कहानी, काव्य, आगम आदि लगभग 25 ग्रन्थों का लेखन आप श्री जी ने किया है।

।। जय जिन वाणी णमो णमो ।।

****